UGC Approved Research Journal No. 47816
पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

ISSN : 2456-8856
डाक पंजीकृत क्रमांक 204/2018-2020 उज्जैन (म.प्र.)

Peer Reviewed Bilingual Monthly International Research Journal

आश्वस्त

वर्ष 23, अंक 203

सितम्बर 2020

14, सितम्बर

हिंदी दिवस

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्टीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 23 अंक 203
सितम्बर 2020

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	हिन्दी-भक्त फादर कामिल : बुल्के के साथ कुछ क्षण	डॉ. दयानन्द बटोही	04
3.	दलित वीरांगना झलकारीबाई	आयु. धवलभाई चौधरी	05
4.	बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर द्वारा संविधान निर्माण करते समय तय किए शिक्षा के मौलिक उद्देश्य	आयु. बी.एल. परमार	08
5.	सामाजिक विषमता और संवेदना का दस्तावेज : मिथकों के किरदार	डॉ.धीरजभाई वणकर	10
6.	वर्तमान हिन्दी-ग़ज़ल की रचनात्मक दिशाएँ	डॉ. मधुर नज्मी	14
7.	दुनिया के महाशक्तिशाली राष्ट्र कोरोना से क्यों काँप रहे हैं थर-थर !	डॉ. लक्ष्मी निधि	17
8.	कविताएँ/ हाइकू / मुक्तक		19

UGC द्वारा मान्यता 47816 प्राप्त पत्रिका
खाते का नाम - आश्वस्त,खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक, शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 15/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 150/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 1,500/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 10,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

तकनीकी विकास के इस क्रान्तिकारी युग में सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ भी तेजी से बदल रहे हैं। शिक्षा व्यवस्था के तीन आधार स्तम्भ है :– (1) प्रासंगिकता (2) समानता और (3) उत्कृष्टता ।

उपभोक्तावादी संस्कृति के वर्तमान परिदृश्य में विद्यार्थी और शिक्षक स्वधर्म, स्वाभिमान, सादा जीवन उच्च विचार तथा नैतिकता पर आधारित जीवन मूल्यों को एक तरह से भूल चुके हैं जिसके दुष्परिणाम आये दिन देखने–सुनने व पढ़ने को मिलते हैं। सामाजिक जिम्मेदारी प्रत्येक नागरिक की नैतिक जिम्मेदारी भी होती है। समाज के व्यापक हित गुरुत्वाकर्षण के नियम की भांति नैतिकता के बुनियादी मूल्य सर्वव्यापी हैं। नैतिक मूल्यों से समाज व राष्ट्र को शक्ति और ऊर्जा मिलती है जिससे देशवासियों में आपस में समानता और बंधुता का भाव विकसित होता है। प्रत्येक व्यक्ति को उसके अधिकार बिना मांगें ही मिल जाये इसके लिये नैतिक मूल्यों का महत्व हर समय प्रासंगिक है। कहा भी गया है कि ''जो बात नैतिक दृष्टि से गलत है वह हर दृष्टि से गलत है।''

थियोडोर रूजवेल्ट का कहना है–''किसी व्यक्ति को नैतिक शिक्षा दिये बिना वैचारिक शिक्षा देना समाज के लिए संकट को न्यौता देना है।''

मानव द्वारा मानव का शोषण और दलन ही क्रान्ति को जन्म देता है। आज देश में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक अनाचार का जोर है। अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक, मजदूर–किसान और सर्वहारा वर्ग के लोग जीवन से जुड़े मानवीय अधिकारों से वंचित हैं।

बोधिसत्व बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर की मान्यता थी कि देश में व्याप्त सामाजिक कलह और विद्वेष का कारण शिक्षा में समानता का अभाव ही है। शिक्षा के अभाव के कारण ही पाखण्ड को धर्म तथा वर्ण व्यवस्था और जातिभेद को ईश्वरकृत मानकर समाज को सवर्ण और अवर्ण में विभाजित कर दिया गया है। सवर्णवादी संस्कृति से दो–चार होने का साहस अछूतों में पैदा करने के लिए शिक्षा को बाबा साहेब ने आवश्यक माना व ''शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो'' का त्रि–सूत्रीय नारा दिया।

शिक्षा समाज में परिवर्तन एवं नवजीवन का संचार करके समता, बंधुता को बढ़ावा दे सकती है। एक ओर शिक्षा जहाँ सामाजिक परिवर्तन लाती है वहीं दूसरी ओर वह सामाजिक परिवर्तन से प्रभावित भी होती है। देश की तकनीकी प्रौद्योगिक और वैज्ञानिक उन्नति के लिए आवश्यक है कि बच्चों को वैज्ञानिक, तार्किक सोच पर आधारित समता–समानता, बंधुतापरक, शोषण–विरोधी शिक्षा आरंभ से ही दी जावे।

दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि आज भी शिक्षा अधिकारवाद, राष्ट्रवाद और संवाद विमुखता से पीड़ित है। यह जगाने के बजाय सुलाने की ओर अधिक झुकी हुई है। वहाँ प्रश्न पूछना, शंका उठाना और जिरह–बहस करना वर्जित है। ऐसी शिक्षा मस्तिष्क का 'यंत्रीकरण' और 'बुद्धि का बंध्याकरण' कर सकती है। मुक्ति के लिये संघर्ष की पतवार नहीं बन सकती। सच्ची शिक्षा उदासीन या पक्षविहीन नहीं हो सकती, चूंकि शिक्षा जागृति की दाई और मुक्ति की माता है, इसलिये वह शोषित–वंचित वर्ग का पक्ष लिये बिना नहीं रह सकती। यहाँ आकर शिक्षा शुद्ध राजनीति हो जाती है और यहीं उसे सत्ता की राजनीति से टकराना भी पड़ता है। यह टकराहट यहीं नहीं रूकती। सत्ताधीशों द्वारा आदमी को 'राज्य की मशीन का पुर्जा' और चुनावी 'मत–पत्र' बनाने की हर कोशिश का पुरजोर विरोध करने में भी उद्दाम रूप से प्रकट होती है।

डॉ. तारा परमार

हिन्दी–भक्त फादर कामिल बुल्के के साथ कुछ क्षण

डॉ. दयानन्द बटोही

रामकथा के प्रणेता डॉ. कामिल बुल्के का जन्म 1 सितम्बर, 1909 ई. को विलियम के वेस्ट फ्लेण्डर्स प्राप्त में हुआ था। शिक्षा विज्ञान में ली। इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त कर भारत की ओर उनका ध्यान आकृष्ट हुआ। बचपन से ही डॉ. बुल्के भारत आना चाहते थे। मगर देर आये दुरुस्त आये वाली कहावत यहाँ चरितार्थ हुई। डॉ. बुल्के भारत आये और क, ख, ग से पढ़ाई शुरू की। तदुरांत हिन्दी विषय में 1945 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि ली। वहीं से 'रामकथा उत्पत्ति और विकास' पर 1949 में पी–एच.डी. उपाधि ली। 1949 से जीवन पर्यन्त रांची विश्वविद्यालय के सेण्टजेवियर्स कॉलेज में हिन्दी–संस्कृत के आचार्य रहे। डॉ. बुल्के से मेरी प्रथम भेंट 1974 में रांची में हुई। उस समय मैं आकाशवाणी, रांची में अपनी कहानी ध्वनियन हेतु गया था। समय लगा डॉ. कामिल बुल्के से मिल लूँ तभी मैंने हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार राधाकृष्ण के साथ कामिल बुल्के के मनरेसा हाउस में जाकर मिला। प्रथम परिचय में ही मैं इतना अधिक प्रभावित हुआ और वे भी मुझसे, कि उन्होंने तुरन्त कहा–'भाई दयानन्द बटोही जी, आपको प्रथम मुलाकात के उपलक्ष्य में क्या दूँ। और उन्होंने मेंटरलिंक की पुस्तक 'नीलपक्षी' मुझे भेंट देकर विदा दी थी। मैंने उनसे आग्रह कर कुछ जानना चाहा तो वे तुरंत तैयार हो गये और उन्होंने, जो मैंने पूछा, कहा। चारों ओर पुस्तकें थीं और बाबा बुल्के हँसकर कहने लगे–'बटोही जी आपसे मैं प्रथम मिलन में प्रभावित हूँ। इलाहाबाद से मैंने भी एम.ए. हिन्दी में किया था, डॉ. जगदीश गुप्त जी कैसे हैं? मैंने बताया वे मेरे गुरु रह चुके हैं तो वे मुस्कुराते रहे। मैंने पूछना शुरू किया।

डॉ. बटोही–हिन्दी साहित्य में सन्नाटा आप महसूस करते हैं ?

डॉ. बुल्के – वास्तविक साहित्यकार सन्नाटा महसूस नहीं करते। केरल, तमिलनाडु में साहित्यकारों का आदर होता है। हिन्दी में यह बात नहीं के बराबर है। हर मध्यवर्गीय परिवार में पुस्तकालय हो, उसमें अच्छी पुस्तकें हों, लोग पढ़ें। सन्नाटा मैं महसूस नहीं करता।

आज पाठक सस्ती पुस्तकें पढ़ते हैं साहित्यिक या अच्छी क्यों नहीं ?

डॉ. बुल्के–सस्ती से मतलब दाम की? नहीं ये साधारण स्तर की पुस्तकें पढ़कर आनन्द महसूस नहीं करते। लोग अभी अच्छा पाठक पैदा नहीं कर सके हैं।

डॉ. बटोही–नयी कविता आपको कैसी लगती है ?

डॉ. बुल्के – मुझे कविता अच्छी लगती है लेकिन नयी कविता में बौद्धिकता अधिक है इसलिए रुचि कम है।

डॉ. बटोही–क्या हिन्दी की प्रगति होगी?

डॉ. बुल्के – हिन्दी में लोग प्रयत्नशील हैं, मुझे ही आप देख रहे हैं। हिन्दी मेरी मातृभाषा नहीं थी, जब मैं आया था क, ख, ग से शुरू किया था। आज मैं देख रहा हूँ कि संसार भर में हिन्दी के जानकार हो रहे हैं। इसकी प्रगति होगी ही, मैं देख रहा हूँ। सबसे बड़ी बात है हिन्दी में हिन्दी वाले ही स्वयं रुचि नहीं लेते। सरल हिन्दी होने पर प्रगति होगी। शुरू में मुझे हिन्दी सीखने में दिक्कत हुई लेकिन तब से अब तक बहुत प्रगति हुई है।

डॉ. बटोही–तुलसीदास ने साहित्य में समन्वय किया है आप सहमत हैं?

डॉ. बुल्के – मैं सहमत हूँ, तुलसीदास ने समन्वय किया है। उन्होंने अपने समय के मुताबिक लिखा है। वातावरण का उन्हें पूरा ध्यान था।

डॉ. बटोही–नई प्रतिभाओं से आप क्या आशा करते हैं?

डॉ. बुल्के – साहित्य या राजनीति या सामाजिक किसी भी क्षेत्र में नई प्रतिभाओं की पहचान होनी चाहिए। नई प्रतिभाओं के लोग सचमुच प्रतिभाशाली हैं लेकिन लोग नई प्रतिभाओं से कतराते हैं, उन्हें पढ़ते ही नहीं, मैं पढ़ता हूँ जबकि इन्हीं में कालिदास, शेक्सपियर, डॉ. अम्बेडकर छिपे है।

डॉ. बटोही–नाटक आपको कैसा लगता है?

डॉ. बुल्के – हिन्दी नाटकों में मोहन राकेश के नाटक बेजोड़ है। कलकत्ता में मैंने देखा था, मुझे अच्छा लगा।

डॉ. बटोही–आधुनिक लेखकों में आपको क्या दिख रहा है?

डॉ. बुल्के – आधुनिक लेखकों के सामने लिखने की ढेर सारी चीजें हैं। मुझे लगता है लोग सही दृष्टि से लिखें तो वास्तविकता का ज्ञान होगा।

डॉ. बटोही– हिन्दी कहानियों में आप रस क्यों नहीं लेते?

डॉ. बुल्के – हिन्दी में प्रेमचंद के बाद तेजी से लोग कहानियाँ लिखते रहे हैं लेकिन प्रेमचन्द की भाषा बहुत कम लोगों ने अपनायी है। मुझे कभी–कभी अच्छी कहानियाँ पढ़ने को मिलती हैं पढ़ने में रस मिलता है। कुछ के नाम मुझे याद आते हैं जिन्हें पढ़कर मैं गदगद हुआ हूँ। रेणु, से.रा. यात्री, सुदीप, जैनेन्द्र, कमलेश्वर, बलराम, दयानन्द बटोही, सूर्यबाला, कुछ तो एकदम नये हस्ताक्षर है फिर भी अच्छा बोध कराते है। देखिए आपकी 'अंधेरे के बीचों–बीच कहानी अभी भी मुझे याद है। उत्तर बिहार में 1970–71 में यह कहानी आई थी न? भला रस क्यों नहीं लेता मगर कहानी भी तो हो पढ़ने लायक।

(मैं हँसता हूँ जोर से, वे मुस्कुराते हैं आँखें तरेरकर)

डॉ. बटोही–लोग कहते हैं तुलसीदास ने शूद्र और नारी को घृणा के दृष्टिकोण से देखा है आप तो तुलसी के भक्त हैं क्या आप सहमत है?

डॉ. बुल्के – एकदम गलत। तुलसीदास जी ने नारी और शूद्र की चर्चा अपने समय को दृष्टिगत रखकर किया है। घृणा के ख्याल से नहीं। बल्कि लोगों को अपना कर्तव्य बोध हो यह सोचकर लिखा है। ईश्वर के सभी बच्चे हैं। शूद्र, नारी या जो भी हों। माँ–बाप के लिए सभी बच्चे बराबर होते हैं तुलसी स्वयं शूद्र और स्त्री भक्त थे।

डॉ. बटोही आप दमे के मरीज होकर भी इतना कष्ट क्यों करते है?

डॉ. बुल्के – यह शरीर प्रभु का है जब तक उनकी आज्ञा होगी काम करूँगा। हाँ, आप साहित्य में जमकर लिखें आपसे सम्भावनाएँ हैं।

मैं प्रणाम कहता हूँ। वे आशीष देकर हस्ताक्षर युक्त पुस्तक तथा अपनी छवि देकर मुझे विदा करते हैं। मैं आज प्रसन्न हूँ तथा दुःखी भी। वे प्रभु के प्यारे हो चुके हैं। प्रसन्न हूँ कि अनेक अमूल्य क्षण उनके साथ बिताए, लेकिन यह प्रथम भेंट जब तक मैं हूँ याद रखूंगा।

'साहित्य यात्रा'
ई.जी.–8, चन्द्रपुरा,
बोकारो–828423 (झारखण्ड)
मोबा. 9955437549

दलित वीरांगना झलकारीबाई

धवलभाई चौधरी
(पी–एच.डी., शोधार्थी)

दलित जाति में जन्में मोहनदास नैमिशराय ने बचपन में ही बहुत कुछ सहा है। उनका बचपन पूरी तरह अभावों में बीता है। उनके साहित्य में दलितों का जीवन संघर्ष और उनकी बेचैनी का जीवंत दस्तावेज है। नैमिशराय का साहित्य मानवतावाद, जातीयता का विनाश, उदात्त आदर्श जीवन की माँग करता है। साहित्य जगत में दलित साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय का जन्म एक गरीब परिवार में सितम्बर, 1947 में उत्तरप्रदेश के मेरठ शहर में हुआ था। मोहनदास नैमिशराय के पिताजी सूर्यकांत सरकारी

नौकरी में कार्यरत थे। बचपन में ही माँ गुजर गयी थी। उसके बाद ताई ने लेखक को गोद लिया था। ताई माँ का ममता भरा प्यार खूब मिलता रहा।

कवि, समीक्षक, कथाकार, नाटककार मोहनदास नैमिशराय ने स्वतंत्र लेखन को अपनाया और अपनी दलित संवेदनों के कारण लम्बे समय तक उपेक्षित और प्रताड़ित भी हुए लेकिन हिंदी दलित साहित्य को स्थापित करने में उनका संघर्ष बेमिसाल है। एम.ए., बी. एड. तक शिक्षा प्राप्त कर पत्रकारिता से जुड़ गए और लेखन को ही अपना कैरियर बनाया। मोहनदास नैमिशराय ने नाटक, कविता, आत्मकथा एवं कथा साहित्य, जीवनी, उपन्यासों आदि की रचना की है।

वीरांगना झलकारी बाई, मोहनदास नैमिशराय का एक अति उत्तम एवं महत्वपूर्ण उपन्यास है। झलकारी बाई उपन्यास में नैंमिशराय जी ने दलित वीरांगना को विशेष रूप से उजागर किया है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में वीरांगना झलकारी बाई का महत्वपूर्ण प्रसंग हमें 1857 के उन स्वतंत्रता सेनानियों की याद दिलाता है, जो इतिहास में भूले–बिसरे है। बहुत कम लोग जानते हैं कि झलकारी बाई झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की प्रिय सहेलियों में से एक थी और झलकारी बाई ने समर्पित रूप से न सिर्फ रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया बल्कि झाँसी की रक्षा में अंग्रेजों का सामना भी किया था। झलकारी बाई दलित–पिछड़े समाज से थीं और निस्वार्थ भाव से देश–सेवा में रही। ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों को याद करना हमें जरूरी है। इस नाते भी कि जो जातियाँ उस समय हाशिये पर थीं, उन्होंने समय–समय पर देश पर आई विपत्ति में अपनी जान की परवाह न कर बढ़–चढ़कर साथ दिया। वीरांगना झलकारी बाई स्वतंत्रता सेनानियों की उसी श्रृंखला की महत्वपूर्ण कड़ी रही हैं।

झलकारी बाई ने न धर्म रक्षा और न जाति रक्षा, को भूल कर चूड़िया पहनना छोड़ देश–रक्षा के लिए बन्दूक हाथ में ले ली थी। उसे न महल चाहिए थे, न कीमती जेवर एवं न रेशमी कपड़े और न दुशाले। वह न तो रानी थी और न ही पटरानी। वह किसी सामन्त की बेटी भी नहीं थी तथा किसी जागीरदार की पत्नी भी नहीं थी। झलकारी बाई गाँव भोजला के एक साधारण कोरी परिवार में पैदा हुई थी और पूरन में शादी हुई थी। पिता भी आम परिवार से थे और पति भी साधारण गरीब परिवार के थे। झलकारी बाई ने देश और समाज के प्रति प्रेम और बलिदान से इतिहास में खास जगह बनाई थी। दुखद बात तो यह है कि जाति विशेष के चश्माधारी इतिहासकारों, साहित्यकारों एवं पत्रकारों में से किसी ने भी दलित समाज की वीरांगना झलकारी बाई की खबर नहीं ली थीं। धन्यवाद के पात्र है उन दलित और पिछड़े समाज के लेखक, पत्रकार एवं नाट्यकारों का, जिन्होंने छोटी छोटी पुस्तकें लिखकर इतिहास के उन महत्त्वपूर्ण तथ्यों को उजाले में लाने का प्रयास किया, जो बरसों से अँधेरे में पड़ी झलकारी बाई को समाज के सामने लाए।

मोहनदास नैमिशराय जी ने वीरांगना झलकारी बाई ऐतिहासिक उपन्यास में झाँसी से चार कोस दूर भोजला गाँव में जन्मी झलकारी बाई का चरित्र–चित्रण किया है। झलकारी बाई की चारित्रिक विशेषताओं का नैमिशराय जी ने खूलकर चित्रण किया है। अंग्रेजों के चंगूलों में फसे भारतीय समाज के लोग और उन के सामने लड़ने की वीरांगना के साहस पूर्ण धैर्यता का चित्रण किया है।

झलकारी की शादी पूरन के साथ होती है, दोनों कपड़े बुनने काम करते हैं। रानी लक्ष्मीबाई ने झलकारी और पूरन को सेना में भर्ती करके प्रशिक्षण देने की जवाबदारी सौंपी थी। जंगल में निशानेबाजी सिखाते वक्त एक बछिया के पैर में गोली लगती है तो गाय हत्या का आरोप झलकारी पर आता है। दलित और सवर्ण जाति के पंच जाति बहिष्कार का दंड देते हैं। गाय को मारने के अपराध में झलकारी और पूरन को

प्रायश्चित करना पड़ा। गंगास्नान और भोज देना पड़ा जिससे झलकारी के गहने बेचने पड़े। दोनों आपस में मानसिक, आर्थिक त्रास भुगतते हैं पर दलित जाति के लोगों ने भी सहारा न दिया। झलकारी में वीरता थी पर समाज से हार जाती है। बछिया प्रसंग में गलती न होने पर भी समाज के सामने घुटने टेक देती है।

झलकारी बाई का प्रभाव सारी महिलाओं में था। रानी कहती है कि हमें युद्ध क्षेत्र में अब उतरना पड़ेगा। तब झलकारी कहती है कि "जा तुमाय पसीना गिरे वा हमाय लहू बहा दैं। उसके साथ दूसरी सखियाँ बोल उठती है हम सब तैयार हैं। तब रानी भी कहती है शाबाश! झलकारी तुमने तो रग–रग में खून दौड़ा दिया।" झलकारी पूरन के साथ रहकर दुश्मनों को घिराने में, सैनिकों में उत्साह बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देती थी। महिला सैनिकों में उत्साह बढ़ाने में योगदान देती है। महिला सैनिकों का उत्साह बढ़ाने के लिए झलकारी बाई कहती है कि "अब गोरा भीतरैं आउन चाता हमारी दीवाल सै भीतरै जैये।'' हमारी इज्जत मिट्टी में मिलेजै। आज बताउनै कि बुन्देलन की जनी परान दै के झाँसी के रच्छा कर है। हुपन हांतन ले लो, सूद मिल लौ, अपनी लाठियाँ निकाल लौ। कंडन जैसे दुश्मन की मुंडी फोर दो, खरिहान सौ बिछा दो एक गोरा लौट के न जा पाउ न उपरै आन पाउनै।" झलकारी की जोशीली वाणी से क्षत्राणियों का रक्त खौल गया। उसके एक–एक शब्द तीर की तरह उनके हृदय में चुभ गए थे। उन्नाव फाटक पर पूरन और झलकारी के सैनिकों ने अंग्रेजों को भगा दिया था।

झलकारी बाई को पति के युद्ध में मारे जाने का दुरूख नहीं था, पर झाँसी की सुरक्षा की चिन्ता थी। आज तक की स्त्रियाँ जौहर करती थीं लेकिन परंपरा को झलकारी ने तोड़ दिया था। पति को चरण स्पर्श करके अंग्रेज सेना पर घायल सिंहनी की भाँति टूट पड़ती है। वह कहती है कि "झाँसी के लाने मोय से पैसे तुमने परान दे दया।" रानी झाँसी से निकल जाती है तब अंग्रेजों का ध्यान हटाने के लिए स्वयं जनरल के केम्प में जाकर स्वयं की पहचान के रूप में देती है। झाँसी का खलनायक दुल्हाजु कहता है ये रानी नहीं है झलकारी है। ह्यूरोज को ललकारती हुई कहती है कि ''मार दजैय गोली, माखौ मोत से डर नई लगै।"

इस प्रकार दुश्मन की छावनी में भी अपनी निडरता का परिचय देती है। अपनी इज्जत पर हाथ डालने वाले पर हथियार चलाना वह जानती है, मौत से नहीं डरती, मौत को गले लगाती है।

अतः इस प्रकार वीरांगना झलकारी बाई उपन्यास में नारी झलकारी बाई की वीरता, साहस, दैर्यता, प्रेम, नेतृत्व जैसे गुणों का चित्रण ऐतिहासिक पात्र द्वारा चित्रित किया गया है। साथ ही समाज में वीरांगना झलकारी बाई का नेतृत्व भी प्रकाश में आया है। झलकारी बाई दलित नारियों में वीरता का शंख फूँकती है। जिस समय में दलितों की परछाईसे भी लोग दूर भागते थे, उस दलित नारी को महिला सैनिकों का कमाण्डर बनाया था। अपनी वीरता, युद्धकला, आक्रोश, निर्भयता एवं नेता के रूप में झलकारी बाई इतिहास में सदा यादगार रहेगी। सचमुच मोहनदास नैमिशराय जी ने अपने उपन्यास वीरांगना झलकारी बाई में इतिहास में छिपी एक महत्वपूर्ण दलित नारी के चरित्र का रेखांकन किया है।

At Post-Dadhavada
Go daunfaliya, Th.-Mandvi
Dist.-Surat-394160 (Guj.)

संदर्भ

1. नैमिशराय, मोहनदास,
   वीरांगना झलकारी बाई, पृ. 81
2. वही, पृ. 94
3. वही, पृ. 98
4. वही, पृ. 82
5. वही, पृ. 39

बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर द्वारा संविधान निर्माण करते समय तय किए शिक्षा के मौलिक उद्देश्य

बी.एल. परमार

अंग्रेज सरकार ने 1927 में शिक्षा संबंधी प्रगति रिपोर्ट जारी की। उसे पढ़कर बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर बहुत दुखी हुए। उन्होंने कहा कि अगर शिक्षा की यही गति रही तो इस पीढ़ी को शिक्षित होकर योग्य नागरिक बनने में सैंकड़ों वर्ष लग जाऐंगे। शिक्षा की यह बहुत ही निराशाजनक स्थिति है। इस पर सदन को गहन चिंतन करना चाहिए। इस कथन से यह सिद्ध होता है कि महान शिक्षाविद् बाबासाहेब भारत की शिक्षा व्यवस्था से कितने चिंतित और व्यथित थे। विश्वरत्न डॉ अम्बेडकर ने संविधान का निर्माण किया तब शिक्षा के उद्देश्य भी तय किए थे। जो इस प्रकार हैं :–

शिक्षा में नैतिक शिक्षा का समावेश हो – भारतीय शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा का अत्यंत अभाव है। नैतिक शिक्षा से ही सदाचार, सत्यता, ईमानदारी, सभ्यता का निर्माण होता है। डॉ अम्बेडकर ने शिक्षा का उद्देश्य नैतिक शिक्षा माना है। जो बालक को अच्छी दिशा और दशा दे। यथार्थ में नैतिक शिक्षा बालक के जीवन निर्माण में ईट, सिमेंट का कार्य करती है। बाबासाहेब का यह कथन अत्यन्त सारगर्भित और सत्य है कि सरकार के पास शिक्षा विभाग है जिसका कार्य छात्रों को नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाना है। उन्हें योग्य, चरित्रवान नैतिक नागरिक बनाना है। वर्तमान में सरकार ने शिक्षाविभाग का नाम बदलकर मानव संसाधन विकास मंत्रालय कर दिया है। अर्थात छात्र राष्ट्र का एक संसाधन है और उसका मात्र विकास करना है। नैतिकता से कोई संबंध नहीं है। आज विश्वविद्यालय नैतिक शिक्षा के अभाव में राजनीतिक अखाड़े बनकर रह गए हैं। प्रदर्शन, आंदोलन, हड़ताल, बंद, घेराव, तोड़फोड़ इनके मुख्य कार्य हो गए हैं। एक विद्वान ने कहा कि राजनीति में उबाल लाने के लिए छात्र लकड़ियाँ हैं इन्हें झोंककर राजनेता अपनी रोटियाँ सेंकते हैं। जयप्रकाश आंदोलन, उज्जैन में प्रोफेसर सभरवाल की हत्या, हैदराबाद में छात्र रोहित वेमुला को आत्महत्या के लिए विवश करना इसके प्रमाण है। यह सब नैतिक शिक्षा के अभाव के प्रमाण है। इसलिए युगदृष्टा बाबासाहेब डॉ अम्बेडकर ने शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा पर भी विशेष बल दिया है किंतु आज के शिक्षाविदों ने उनके विचार को महत्व नहीं दिया।

शिक्षा सार्वभौमिक व सर्वसुलभ हो–विश्वरत्न बाबासाहेब ने शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने पर जोर दिया। हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी होना चाहिए कि दलित, आदिवासी, गरीब, दीन–हीन, बालक–बालिका भी सुगमता से शिक्षा प्राप्त कर सके। सरकार ने शिक्षा व्यवस्था से हाथ खींच लिए और उन व्यवसायियों, मुनाफाखोर, पूंजीपति, उद्यमियों को शिक्षा का दायित्व सौंप दिया जो शिक्षा को उद्योग समझ कर छात्रों, पालकों का शोषण कर रहे हैं। उनकी फीस इतनी भारी भरकम होती है कि दलित और गरीब छात्र देने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं। सरकार द्वारा छात्रवृत्ति दी जाती है किंतु कई विद्यालय फर्जी तरीके से छात्रवृत्ति डकार जाते है या प्रक्रिया में उलझा देते है। यथार्थ में शिक्षा निजि हाथों में जाने से सर्वसाधारण की पहुंच से दूर हो गई है। दलित छात्र पढ़ना चाहते हैं किंतु उनकी आर्थिक क्षमता इतनी नहीं है कि वे भारी भरकम फीस चुका सके। अतः शिक्षा सर्वसुलभ हो।

शिक्षा समानता स्थापित करने वाली हो – युगदृष्टा डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि देश के विद्यालयों में जो शिक्षा दी जा रही है वह समानता की पोषक नहीं, असमानता की जननी है। क्योंकि बाबासाहेब ने स्वयं भारत, अमेरिका, इंग्लेंड आदि देशों में अध्ययन करके देखा था कि कितनी असमानता है। भारत में बाबासाहेब को स्कूल से बाहर, ब्लेकबोर्ड से दूर, छात्रों–शिक्षकों को बिना छुए तथा प्यासे रहकर अध्ययन करना पड़ा था। जबकि विदेश में बिना भेद–भाव के सबके साथ मिल–जुलकर समानता से अध्ययन किया। जिसका

गंभीर प्रभाव उनके जीवन पर पड़ा। यहीं से प्रेरित होकर बाबासाहेब ने असमानता के विरूद्ध भारत में क्रांति का शंखनाद किया। किंतु आजादी के 73 वर्ष बाद भी देश की शिक्षा व्यवस्था में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। छात्र वेमुला और कन्हैया को जातियहीनता का शिकार होना पड़ा है। रेगिंग व भेदभाव से दलित छात्रों को रूबरू होना पड़ता है। अपमान से कुंठित होकर पढ़ाई तक छोड़ने पर मजबूर होते हैं। अतः शिक्षा समानता स्थापित करने वाली हो । व्यक्ति का समाज में समायोजन करने की भावना का विकास हो, मनुष्य एक सामजिक प्राणी है। यदि उसमें मनुष्यता का विकास नहीं होगा तो पशु और मनुष्य में कोई अंतर नहीं रहेगा। यह शिक्षा ही है जो मानव और पशु में अंतर करती है। पशुतुल्य मानव को शिक्षा ही सभ्य मनुष्य बनाती है। विश्वरत्न डॉ अम्बेडकर इस संदर्भ में कहते है कि शिक्षा का उद्देश्य लोगों को समाज में समायोजन करना सिखाना है। उन्हें समाज में सभ्य नागरिक बनकर नैतिकता से रहने का पाठ पढ़ाना है। ताकि वे इस मानव समाज में सबके साथ घुलमिलकर रह सकें। समाज में सबको रहने का अधिकार है। **जियो और जीने दो** हमारी संस्कृति है। गरीब–अमीर, छुआ–छूत, ऊँच–नीच, जाति–धर्म की दिवारों से मानव मानव में नफरत, घृणा, वैर, वैमनस्य उत्पन्न होता है। समायोजन ही मनुष्य का धर्म है। यह शिक्षा से ही संभव है ।

चरित्र का निर्माण हो – शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य चरित्र का निर्माण करना है। बाबासाहेब डॉ अम्बेडकर कहते है कि चरित्रहीन और विनयहीन शिक्षित व्यक्ति पशु से अधिक खतरनाक होता है। यदि पढ़ा लिखा व्यक्ति गरीब के साथ अन्याय, अत्याचार करता है तो वह समाज के लिए कलंक है। ऐसे शिक्षित को धिक्कार है। धन की अपेक्षा चरित्र अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा चरित्र और धन दोनों प्रदान करती है। शिक्षाविद् डॉ अम्बेडकर कहते है कि जिसके पास चरित्र रूपि मणी है वही दुनिया का सबसे बड़ा धनवान है। शिक्षा का मुख्य ध्येय चरित्र निर्माण करना होना चाहिए।

शिक्षा का दृष्टिकोण वैज्ञानिक हो – दुख के साथ कहना पड़ता है कि आज भी भारत की शिक्षा का मूलाधार रामायण,गीता,महाभारत एवं पुराणों की कपोल कल्पित निराधार अंधविश्वासी कहानियों पर आधारित है। विश्वविद्वान डॉ अम्बेडकर चाहते थे कि भारतीय शिक्षा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से दी जाना चाहिए। वर्तमान अवैज्ञानिक शिक्षा से देश व समाज का भला नहीं हो सकता। छात्रों को बचपन से ही यज्ञ–हवन, पूजा–पाठ, जप–तप, कर्म–कांड, ग्रह–नक्षत्र भजन–कीर्तन, तिलक, माला, अवतारवाद में उलझा दिया जाता है। तब वह इससे बाहर कुछ सोच भी नहीं पाता है। उस पर विपत्ति आने पर वह कोई वैज्ञानिक उपाय नहीं खोजकर मूर्ति पर दूध चढ़ाना, दुर्गाआरती, गीता–पाठ या हनुमान चालीसा करने लग जाऐगा। डॉ अम्बेडकर ने कहा है कि जब तक भारतीय शिक्षा शास्त्रों से मुक्त नहीं होगी मनुष्य अंधविश्वासी बना रहेगा। सर्वप्रथम शिक्षा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण देने के लिए शिक्षा विभाग में कार्यरत अधिकारी एवं शिक्षक वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले होने चाहिए। तिलकधारी, शास्त्रीय, अंधविश्वासी, मालाधारी, पाखंडी, पुरातनपंथी, लकीर के फकीर, जड़मती तो उसी प्रकार की शिक्षा प्रदान करेंगे। अतः भारत में शिक्षा का आधार वैज्ञानिक नहीं होने के कारण यहाँ की शिक्षा एवं शिक्षा व्यवस्था दूषित और अवैज्ञानिक है। इसिलिए विश्वविभूति डॉ अम्बेडकर चाहते थे कि शिक्षा का आधार शुद्ध रूप से वैज्ञानिक दृष्टिकोण का होना चाहिए। जिससे भारत में जाति–भेद, छुआ–छूत, अंधविश्वास, वर्णव्यवस्था, ऊँच–नीच और पाखंड से मुक्ति मिले। देखा यह जाता है कि भारतीय छात्र परीक्षा के पूर्व मंदिर जाकर पूजा–अर्चना कर उत्तीर्ण होने के लिए पाँच–सवापाँच रूपए की प्रसाद चढ़ाने की मन्नत मांगते हैं। क्या ऐसे छात्र–छात्रा वैज्ञानिक हो सकते है ? उनके मनमानस में बचपन से ही ऐसी अंधविश्वासपूर्ण विचारधारा ठूंस दी जाती हैं। हमारे टीवी चौनलों का भी अंधविश्वास फैलाने में बहुत बड़ा योगदान है। जरा जरा सी समस्या पर मंदिर देवी–देवता, मंत्र, पूजा–पाठ, आराधना साधना का सहारा लेते हुए दिखाया जाता है। जिससे प्रभावित होकर युवा पीढ़ी अंधविश्वासी, अर्कमण्य होती है। विश्वविद्वान बाबासाहेब डॉ अम्बेडकर ने कहा था कि पाठ्यसामग्री विवेकपूर्ण बुद्धिगम्य, तार्किक और

वैज्ञानिक आधार की होना चाहिए। कपोल कल्पित कहानियों पर पाठ्यक्रम नहीं गढ़ना चाहिए। पाठ्यकम गढ़ते समय वैज्ञानिक दृष्टिकोण सामने रखना चाहिए। जिससे छात्रों में सामाजिकता, समानता, सद्भाव, राष्ट्रीयता, मानवता, स्वतंत्रतता, भाईचारे का विकास हो। राष्ट्र के प्रति त्याग बलिदान की भावना विकसित हो। अपने कर्तव्यों का ज्ञान हो। राष्ट्रीय संपत्ति की रक्षा, देश की एकता अखंडता, राष्ट्रध्वज, तिरंगे का सम्मान, पाठ्यक्रम में निर्धारित ही नहीं हो व्यवहार में भी चरितार्थ होना चाहिए ।

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो – यह सर्वविदित और सर्वमान्य है कि छात्र अपनी मातृभाषा में जितना जल्दी और भली प्रकार से समझ सकता है उतना किसी अन्य थोपी हुई भाषा में नहीं समझ सकता। मातृभाषा में दी गई शिक्षा से अच्छी प्रकार समझकर अपने भावों को अभिव्यक्त भी कर सकते हैं। इसलिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए। बाबासाहेब डॉ अम्बेडकर का कथन उपयुक्त और वैज्ञानिक है कि शिक्षा के माध्यम के रूप में देशी भाषा अर्थात मातृभाषा का प्रयोग होना चाहिए जिससे छात्र–छात्रा अपना सर्वांगीण विकास कर सके। किंतु यह बात वर्तमान अवस्था में संभव नहीं लगती है। भारत में आज एक ऐसा वर्ग तैयार हो गया है जो अंग्रेजीपरस्त है। अपने बच्चों को भी अंग्रेजी स्कूल में दाखिला दिलवाकर अपने आपको गौरान्वित महसूस करता है। फिर भी शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा ही होना चाहिए तभी हम राष्ट्रीय लक्ष्य प्राप्त कर सकेंगे ।

अतः विश्वविभूति बाबासाहेब डॉ अम्बेडकर के उक्त शिक्षा संबंधी अमूल्य विचार आज के संदर्भ में अति महत्वपूर्ण है! तभी शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास की चाबी बन सकती है। शिक्षा का वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधकर प्रगति कर सकता है। नैतिकता, समानता, समायोजन, चरित्र शिक्षा के अंग और आभूषण है। राष्ट्र शरीर तो शिक्षा आत्मा है। सुदृढ़ राष्ट्र के लिए शिक्षा व्यवस्था भी सुदृढ़ होना चाहिए ।

13/37, भार्गव कॉलोनी, नागदा जं.
जिला उज्जैन-456335 (म.प्र.)
मोबा. 8989702048

सामाजिक विषमता और संवेदना का दस्तावेज : मिथकों के किरदार

डॉ. धीरजभाई वणकर

विपिन बिहारी हिन्दी दलित साहित्य के ख्याति प्राप्त कथाकार तो है ही, साथ में अच्छे कवि भी है। उनके अब तक ग्यारह कहानी संग्रह, छः उपन्यास, एक लघुकथा संग्रह और दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। सन् 2019 में उनका दूसरा कविता संग्रह मिथकों के किरदार 'बोधि प्रकाशन', जयपुर से प्रकाशित हुआ है। आलोच्य संग्रह में कुल 101 कविताएँ संग्रहित हैं। वस्तुतः साहित्यकार का लेखन परिस्थितियों के उन बिन्दुओं को भी रेखांकित करता है जो उसके आसपास के समाज में घटित होते हैं। समाज में फैली नकारात्मक शक्तियों के खिलाफ सकारात्मक दृष्टिकोण का प्रसार करना कवि का उद्देश्य होता है। दलित कविता आनंद के लिए नहीं लिखी जाती। दलित कवि वेदों की नहीं बल्कि वेदना की बात करता हैं। सामाजिक विषमता, छुआछूत, शोषण, अंधविश्वास, पाखंड, अत्याचार एवं अन्याय से मुक्ति की छटपटाहट और जागृति की मशाल लिए उनके निराकरण का सन्देश देना विपिन बिहारी की कविताओं का लक्ष्य है। इन संग्रह की कविताओं में विषय वैविध्य देखने को मिलता है जैसे–धर्म, घिनौनी राजनीति, राष्ट्रवाद, पूंजीवाद जातिगत भेदभाव, हिंसा, विस्थापन, अत्याचार, गरीबी, काले कारनामें, परिवर्तन, नक्सलवाद, गांवों का नग्न यथार्थ, प्रेम आदि।

'मिथकों के किरदार' संग्रह की एक–एक कविता संवेदना से ओतप्रोत हैं। मानव–मानवता के गुणों को सहेजने का कार्य इन कविताओं का मुख्य स्वर है। कवि विपिन बिहारी की कविताएँ मानव–मानव में किसी भी विभेद के खिलाफ हैं। समता के लिये उनकी कविताएँ शोषित–पीड़ित, वंचित वर्ग की वकालत करती हैं।

भारत में सामाजिक व्यपस्था बड़ी विलक्षण है,–जहाँ वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था पर ही आधारित है। धर्मग्रंथों ने दलितों का जीवन नारकीय बना दिया। धर्म के ठेकेदार आज भी जहर उगल रहे हैं। धर्म के नाम पर मानव–मानव को लड़ाते हैं। दलित साहित्यकार बाबासाहब के विचारों के वाहक है। बाबासाहब ने आखिर धर्म परिवर्तन किया था, क्योंकि जो धर्म मनुष्य को मनुष्य मानने को तैयार नहीं, इसका क्या मतलब? दलित गलत होता है तो तुरन्त प्रतिक्रिया, प्रतिरोध करते है। संग्रह की 'प्रतिहिंसक होना अधार्मिक है' कविता की एक बानगी देखिए–उनका हिंसक होना धार्मिक है। आपका प्रतिहिंसक होना अधार्मिक है।

हिंसा पर प्रतिहिंसा की विजय।
धर्म पर अधर्म की विजय मानी जाती है
आपकी जीत को/कोई नहीं है कहने वाला
सत्यमेव जयते। पृ. 37

धर्म परिवर्तन के लिए जबर्दस्ती की जाती है। कवि ने बेबाकी से इन्कार किया? 'मैं नहीं कहता बदल डालो अपना धर्म ।

बिल्कुल मत बदलो। विधर्मा तो हो ही सकते हो,?
और इंसानी धर्म कौन सा बुरा है
तुम खुद को ही धर्म मान लो,
बहुत शातिर लोग हैं वे।
सब बड़े खिलाड़ी कहे जाते हैं
यूज एंड थ्रो के।'' (पृ. 38, 39)

संग्रह की पहली कविता ध्यानाकर्षक है– हमारा शम्बूक/सदियों से ये राम–कृष्ण को ईश्वर के रूप में मानते हैं । दलित कवि भगवान को नकारता है। इस कविता में जब तक राम रहेगा तब तक शम्बूक भी बना रहेगा ऐसा कवि कहता हैं–

लेकिन जब तक/ तुम्हारा राम बना रहेगा/
हमारा शंबूक भी/बना रहेगा हमारे जेहन में पृ. 17

हमारा देश लोकतांत्रिक है। देश का आदर्श सविधान बनाने में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर की अहं भूमिका रही है। उन्होंने संविधान में ऐसे प्रावधान किये कि यह देश एवं संविधान धर्मनिरपेक्ष तथा समाजवादी रहे। उन्होंने संविधान सभा के समक्ष अपने मजबूत व अकाट्य दलीलों द्वारा सभी को संतुष्ट किया और सभी बाधाओं का निराकरण किया। मौजूदा दौरे में देखा जाये तो लोकतंत्र सिर्फ एक शब्द रह गया है। आम जनता की कोई सुनता नहीं, उनकी आवाज दबाई जाती है। कुछ सत्तालोलुप नेता घिनौनी राजनीति करने लगे है सरकारी तंत्र में अव्यवस्था, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, लापरवाही, दबंगाई का सजीव एवं सटीक वर्णन–'राजा का हाथी आ रहा है', उनके 'तमाशबीन' 'चला गया मुसोलिनी भी' उनकी मंशा, 'विकास पुरुष' आदि में देखने को मिलता है। संग्रह की 'राजा का हाथ आ रहा है' मैं बखूबी के साथ राष्ट्रवादी छद्मों को बेनकाब किया गया है–चुप रहो/दूर हटो/राजा का हाथी आ रहा है। कुछ भी बोले कि

रौंद दिये जाओगे/बढ़ रहे हैं रोज/उनके तमाशबीन,
एक ऊँचाई। छू रही है तमाशबीनों की तादाद।
क्या उनके तमाशबीन। कभी न कम होंगे। पृ. 19

कवि की ललकार देखिए–

तुम्हारे मंसूबे से हैरान नहीं है हम
जो कुछ भी कर रहे हो। तुम्हारा स्वभाव ही है ऐसा। तुम अब भी यह मानने के लिये तैयार नहीं हो। मानव हैं हम भी (पृ. 20)

जातिगत भेदभाव ने दलितों को पशु से बदतर बना दिया। हिन्दू समाज में फैली धुआछूत, जाति ने हाशिये के लोगों को ऊपर उठने नहीं दिया। आदमी जहाँ–जहाँ जाता है, उनके पीछे–पीछे परछाई की तरह जाति भी जाती है। जातिगत भेदभाव के विष ने अनेकों की जान ली हैं। दलित उत्पीड़न जस की तस है। आज दलित सुरक्षित नहीं हैं। उन पर अत्याचार हो रहे हैं इक्कीसवीं सदी में भी दलित हिजरत बरकरार हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् की डींगे मारने वाले लोगों की

असलियत कुछ अलग ही है वे हमें मानव मानने के लिए तैयार नहीं है। साँप की तरह जहर उगलते रहते हैं इस कटु सत्य को 'पृथ्वी के कर्णधार' में रेखांकित किया गया है–

'विश्व बंधुत्व का नारा देनेवाले/दानशीलता के मंत्र बुदबुदाने वाले/आखिर तुम्हारे पास कहाँ से आता है इतना जहर जो उगलते रहते हो हर वक्त.../चलते रहते हो शतरंजी चालें/ रचते रहते हो साजिशें। मनुष्य को अमनुष्य बनाने का। खेल रहते हो खेल' (पृ. 42)

कवि बड़े सजग व सतर्क है, उनकी दृष्टि चारों ओर घूमती रहती है। ब्राह्मणवादी मानसिकता अभी भी मानती है कि वे ब्रह्मा के मुख से पैदा हुये थे और शूद्र पैरों से। यह कितना मूर्खतापूर्ण तर्क है। कवि खुलेआम कहते है कि हम भी तम्हारी तरह ही पैदा हुये है।

वे सभी अब भी समझते हैं कि वे मुख उत्पन्न हैं
और लोग नहीं समझते हैं कि वे मुख उत्पन्न है
जिस दिन अपनी हद पार कर जाएंगे
असहमत लोग खड़े हो जाएंगे उनके फैसले के खिलाफ। (पृ. 22)

विपिन बिहारी की कविताएँ यथार्थ के भाव के धरातल पर रखती हुई संवेदना को झकझोरती हैं। वर्चस्ववादियों की निर्दयता के खिलाफ मुख खोलते हुये, भंडाफोड़ती हैं–चूल्हें का धुआ/पीने को आतुर है वे/चूल्हे सुलगाने की माचिस/छीन लेने का जुगाड़ कर लिया है उन्होंने/मिट्टी का रंग बदल गया, क्या ऐसा भी हो सकता है। (पृ. 24)

हत्याएँ हुई/लेकिन कोई रोकने वाला नहीं/जैसे खून की धाराएँ उन्हें सुकून पहुँचा जाती हैं। (पृ. 89)

मौजूदा दौर में गरीब और गरीब होता जा रहा है और अमीर अधिक अमीर होता जा रहा है। हाशिये का समाज आज भी रोटी के लिए तड़प रहा है। पूंजीवाद का बोलबाला है, उनके घरों में छप्पन भोग पकते हैं जबकि श्रमजीवी, गरीब के घर चूल्हा तक जलता। विषमतामूलक समाज रचना कवि के दिल को दहला देती है क्योंकि दलित समाज की विडम्बनाओं, तिरस्कारों, अपमानों को उन्होंने भोगा और अपनी आँखों से देखा भी है। इसलिये वे अन्याय व अनीति के विरुद्ध स्वानुभूति के कारण संघर्ष करने लिए विवश हुए। ये कैसा निजाम है' कपिता में इस बात की पुष्टि हुई है–

वे सोचते है, हम उनके बरअक्स न आये
हम जैसे बेबस थे, वैसे ही बन रहें
अक्सर झुका रहे। उनके आगे हमारा सिर
भूख से तड़पते रहें, और रोटी के लिये/
चिल्लाते रहे। (पृ. 90)

श्रमजीवी के श्रम पर पूँजीवादी जलसा करते है। पसीना कोई बहाये मेवा–माखन दूसरा खाये इससे बड़ी क्रूरता क्या हो सकती है? इस कटु सत्य को बखूबी 'उम्मीद से भी भरता पेट' कविता में प्रस्तुत किया गया है। गरीब हिम्मत नहीं हारता –

कमाने वाला कभी भी नहीं खाता भरपेट खाना

जैसे ही वह खाने बैठता है, मेड़ टूटने की आवाज सुनाई पड़ती है उसे/वह मेड़ बाँधने दौड़ पड़ता है/खाना छोड़कर देखने लगता है/लहलहाती फसलें/फसलों से लहलहाते खेत एक उम्मीद/उसके मुंह से होते हुए उसके पेट में उतर आती है। (पृ. 108)

'अधपकी रोटियाँ' नामक कविता की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है–'धुएँ में/पकती रोटियाँ/लापता हो जाती है चूल्हें से चूल्हें के आसपास बैठे बच्चों की आँखों में/घूमता हुआ लगता है ब्रह्माण्ड/भूख की पहेलियाँ बनकर। (पृ. 109)

अपने आपको उच्च–सवर्ण मानने वाले वाकई में व्यवहार से, संस्कारों से भद्र नहीं होता। उनकी कथनी–करनी में बड़ा अंतर होता है। पूंजीवाद, ब्राह्मणवाद के काले कारनामों पर पर्दाफाश करते हुए कवि ने व्यंग्य में लिखा है –'लेकिन चारों तरफ तुम ही

तुम हो, गंधा डाला ब्रह्माण्ड को बलात्कारी होने पर भी हो महान,

कालाबाजारी होने पर भी होती है तुम्हारी पूजा...

तुम अपराध मुक्त हो / हत्यारा होने पर भी(पृ. 40)

संग्रह 'मालिकानाहक' कविता की संवेदना देखिए–

उन्होंने छू दी / मेरे घर की दीवार / और उस पर / अपना नाम लिख दिया मालिकाना हक / उनका हो गया / मेरे घर पर / और मैं अपना घर छोड़कर / निकल पड़ा। (पृ. 98)

स्वतंत्रता एवं समता के प्रति सक्रिय निष्ठा और दलित दमन का मुखर विरोध विपिन बिहारी की कविताओं का आधार है उनकी कविताएँ दलित चेतना एवं अस्मिता की मुखर अभिव्यक्ति है तथा अधिकार हासिल करने हेतु कृत संकल्प रहने की आवाज हैं। कवि संकीर्ण विचारधारा एवं मानसिकता को ध्वस्त एवं नष्ट करना चाहती है। दलित कविता ने दलित अस्मिता को उभारा है और दमन को नकारा एवं धिक्कारा है। बाबासाहब ने दलितों में ऊर्जा भरने का उमदा कार्य किया था। आज हाशिये का समाज पढ़–लिखकर स्वावलम्बी तो बनता जा रहा है, साथ ही अन्याय के खिलाफ शोला बनकर अंगारे बरसाता है, चुनौती एवं चेतावनी देकर समता की कल्याणकारी राह पर चलने का आग्रह करता हैं।

बदल गया बहुत कुछ कविता की ये पंक्तियाँ मिसाल के तौर पर'– अब बधुआ तुम्हें देखकर / खटिया पर बैठकर पढ़ता रहेगा अखबार / वह नहीं उठेगा खटिया से / तुम्हारी जी–हुजूरी करने / नहीं करेगा दंडवत / मंगरा भी निकाल लेगा लाठी / तुम्हारी लाठी के जवाब में (पृ. 59)

कवि का आक्रोश, विद्रोह 'उबल लावा' में मुखरित हुआ है–

कोई कह रहा है हिंसक हो गए हैं हम

कोई कह रहा है बहक गए हैं हम

कोई कह रहा नहीं है हमारी आवाज / समझ जाएं वे भी उबल पड़ा है लावा / गुजरेगा जैसे–जैसे समय / और उबलेगा लावा... फिर होगी / आपने–सामने की जंग / रोक सके तो रोक लें वे। (पृ. 75) होगा विद्रोह कविता में विद्रोह का तेवर देखें–विद्रोह होगा एक दिन जरूर तुम्हारे महल–अटारी ढ़हेंगे / हमारे धक्के से (पृ. 41)

'मिथकों के किरदार' कविता महत्वपूर्ण व सटीक है। वर्चस्ववादी के नाम कई काले कारनामें दर्ज होते हैं। कवि कटु यथार्थ को बया करते हुए कहते हैं – उनके नाम से दर्ज हैं कई कारनामे / कई मिथकों के / किरदार बने हुए हैं वे / कई मंचों पर दिखा चुके हैं अपना जलवा (पृ. 77)

दारिद्रय दुःख–दर्द, व्यथा–वेदना, पीड़ा–संत्रास, अस्पृश्यता आदि से कवि विपिन बिहारी का भाव विश्व संव्याप्त है। सभी की मर्यादा होती है, सीमा होती है, किन्तु हमारे दुःखों की सीमा क्यों नही? यह सवाल दलितों के दिल में कोधता रहता है। कवि की मान्यता है कि जिस संस्कृति, धर्म, समाज व्यवस्था ने इस देश के दलित –पीड़ित मनुष्य का मनुष्यत्व ध्वस्त किया हो उन सभी के विरोध में विद्रोह करना जायज है। इस अन्यायी समाज व्यवस्था को तहस–नहस करना आवश्यक है। पिछले कुछ वर्षों से विकास का ढोल जोर–जोर से पीटा जा रहा है। मेट्रो ट्रेन से पहले लोगों को रोटी की जरूरत है। देश के कई लोग भूखे मर रहे हैं। गरीबी हटाओ की बात तो करते हैं किन्त हकीकत कुछ अलग यथार्थ का चित्रण करते हुए कवि कहते है –

विकास पुरुष / विकास–विकास चिल्लाता है / लेकिन विकास नहीं होता / विकास पुरुष / गरीबी दूर करो... गरीबी दूर करो / गरियाता है लेकिन गरीबी दूर नहीं होती / दावा करते भ्रष्टाचार मुक्त होने का / लेकिन भ्रष्टाचार दूर नहीं होता। (पृ. 83)

देश का हर नागरिक देशप्रेमी होता है किंतु राष्ट्रवाद के नाम पर लोगों को बहकाना, लड़ाना हमारे

लिए खतरा पैदा करता है। कवि झूठे राष्ट्रवाद एवं झूठी राष्ट्रवादिता पर बेबाकी से ठेंगा दिखाने का काम करते हैं –

वह रोज नई–नई/राष्ट्रवाद की परिभाषा के/गढ़ रहे प्रतिमान उनके हुड़दंग में भी/उलीचा जा सकता है राष्ट्रवाद, किसी की हत्या में। (पृ. 44)

झूठी–कपटी मानसिकता की 'इस देश में' उजागर हुई है –

सच में/बर्बाद कर जायेंगे वे देश/गोबर के नाम/राष्ट्र के नाम पर/राष्ट्रवाद के नाम पर...तुम्हारा हर स्टंट/नहीं चलेगा इस देश में। (पृ. 102)

'मसीहा एक' महत्वपूर्ण कविता है। अपने को जनता का सेवक, मसीहा बताने वाले की पोल इन पंक्तियाँ खोली गई है– मसीहा चुप है/लेकिन देख रहा है/अपनी आँखें फाड़–फाड़कर/कौन कितना पिटता है/कौन कितना हुआ लाचार/कौन कितना रोता है । (पृ. 26)

संग्रह की 'कामरेड होने का गर्व', मसीहा रोता क्यों है, अपने लोगों के चेहरे, उनके घरों में भी, शौर्यगाथाएँ, पहाड़ की ऊँचाई, सावधान, मरी नहीं हैं संवेदनाएँ आदि कविताएँ हमारे दिल को दहला दे ऐसी है। मिथकों के किरदार संग्रह की कविताएँ सदियों से पीडित, शोषित, दमित आवाज को मुखरता से उठाती है। साथ ही शोषण , अपमान , गरीबी, घृणा, तिरस्कार, मुखौटाधारी से मुक्ति का मार्ग दिखाती हैं।

मैं विपिन बिहारी की संग्रह पाठकों को देने के लिये साधुवाद देता हूँ।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
जी.एल.एस. कॉलेज फॉर गर्ल्स, दीनबाई टॉवर केसामने,
लाल दरवाजा – अहमदाबाद (गुजरात) पिन. – 380001
मो. 09638437011

कविता संग्रह–मिथकों के किरदार
कवि – विपिन बिहारी
प्रकाशन – बोधि प्रकाशन, जयपुर
मूल्य – 150/–
वर्ष – 2019

वर्तमान हिन्दी–ग़ज़ल की रचनात्मक दिशाएँ

डॉ. मधुर नज्मी

ग़ज़ल अपनी मूल वैचारिक सत्ता में 'सॉनेट' ही की तरह, वैदेशिक काव्य–रूप है, भारतीय परिवेश और परिदृश्य में आकर ग़ज़ल हिन्दी और उर्दू दोनों ही अलग–अलग भाषाओं में अपना रूपाकार काफी तब्दील कर चुकी है हिन्दी के अधिसंख्य समालोचक उर्दू और हिन्दी को एक रूप मानते हैं और अपने–अपने तर्क से यह सिद्ध करते हैं कि दोनों ही भाषाएँ एक हैं सिर्फ लिपि भेद है। कोई भी भाषा अपने संस्कार और संस्कृति से पहचानी जाती है। दोनों ही भाषाओं के संस्कार अलग–अलग बोध अलग–अलग और अन्तर्लीनता अलग–अलग है। हक़ीकत यही है, तर्क अलग–अलग, विचार अलग–अलग हो सकते हैं। बहरहाल, मैं ग़ज़ल से मुखातिब हूँ। जो भारतीय साहित्य से लगायत वैदेशिक साहित्य में अपनी गतिमती भूमिका से अपनी प्रभावान्वित के साथ विस्तृति पा रही है। हिन्दी और लोक भाषाओं के कायिक कलेवर में आकर ग़ज़ल एक नये काव्य रूप में अवतरित हुई है। दुष्यन्त कुमार ने उर्दू का सहज दामन थामकर, हिन्दी–ग़ज़ल को वैश्विक आधार–फलक दिया। हिन्दी–ग़ज़ल अपनी विशिष्ट पहचान के चलते साहित्य में महत्तम भूमिका रच रही है। दुष्यन्त कुमार के पूर्व 'हिन्दी–ग़ज़ल' का कोई खास चेहरा नहीं था– दुष्यन्त कुमार की समर्पणशीलता, कल्पनाशीलता और भाषाई ऊर्जस्वलता से, अपनी अभिव्यक्ति–क्षमता से 'ग़ज़ल' को हिन्दी 'ग़ज़ल' का मान–सम्मान दिया। शोध की दिशा में निकले शोधार्थियों ने और उनके निदेशकों ने तुलसी, कबीर, मीरा और सूर तक में 'ग़ज़ल' के रूप में निहारा। 'हिन्दी ग़ज़ल' के पास लोकबोधी, क्रियाबोधी और रसबोधी विराट कैनवास था जिसको प्रयोगिक परिधि में लाकर कुछ नये और पुराने ग़ज़लकारों ने उर्दू–ग़ज़ल के मुकाबले कुछ नया

प्रदायित किया जिससे हिन्दी–ग़ज़ल की प्रतिष्ठा में इज़ाफ़ा हुआ। आज हिन्दी–ग़ज़ल पत्र–पत्रिकाओं से लगायत दूरदर्शिनी अवसरों तक अपनी सृजनाकृति पा रही है हिन्दी–ग़ज़ल के साधक ग़ज़लकार, समीक्षक डॉ. चन्द्रभाल सुकुमार अपनी सद्यः प्रकाशित ग़ज़ल कृति 'इस नदी से बात करनी चाहिए' में कहतें हैं ''हिन्दी–ग़ज़ल को तरह–तरह के आरोपों के कटघरे में खड़ा करने वाले उर्दू–प्रिय रचनाकार, आलोचक न जाने क्यों हिन्दी कविता और गीत के विषय में मौन धारण कर लेते हैं। हिन्दी–ग़ज़ल उर्दू–ग़ज़ल के शहर की कोई कॉलोनी नहीं बल्कि एक स्वतंत्र नगर है। सिर्फ ग़ज़ल शब्द के प्रयोग से उर्दू का कोई कॉपीराइट हिन्दी–ग़ज़ल पर नहीं बनता। वैसे ग़ज़ल उर्दू का शब्द है ही कहाँ? आवश्यकता है कि दोनों भाषाएँ अलग–अलग अस्तित्व बनाये रखते हुए व्यर्थ की खींचा–तानी से परे हटते हुए भाषाई विश्व मैत्री की मिसाल बनें। आप अपनी बहरों में खुश रहें और हम अपने छन्दों में।''

हिन्दी–ग़ज़ल पर पहले उर्दू–ग़ज़लकारों के आरोप थे कि हिन्दी–ग़ज़लकारों की कम ही ग़ज़लें व्याकरण के अनुशासन में होती हैं। आज तकरीबन स्थिति उलट है। अधिसंख्य ग़ज़लकारों की ग़ज़लें व्याकणिक अनुशासन में है। ग़ज़ल–विधा की शर्तों को व्याकरणिक नज़रिया से, काफी मेहनत के बाद साध लिया गया है जो साध नहीं सके हैं उनके तर्क अलग हैं : 'फ़ेक' ग़ज़लों के लिये वे कहते हैं यह 'प्रगतिशील ग़ज़ल है। ग़ज़ल के लिये व्याकरण को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता 'प्रगतिशील ग़ज़ल' कहने वालों के लिये मुनासिब है कि वे ग़ज़ल का दामन छोड़कर नयी कविता, छन्द विहीन कविता लिखें : ग़ज़ल कहनी है तो व्याकरण की शर्तों को मानना ही होगा। बगैर छन्दसिक अनुशासन के ग़ज़ल या गीत लिखना विधा का अहित करना है। कुछ वरिष्ठ समीक्षक ऐसे है जो धड़ल्ले से हिन्दी–ग़ज़ल की भूमिका लिखने का काम कर रहे हैं : ग़ज़लकार खुशफहमी में है कि चर्चित समीक्षक–समालोचक ने उनकी ग़ज़ल कृति पर समीक्षा लिख दी है। ग़ज़लकार अपने को उपकृत समझ रहे हैं। उनकी समीक्षा में उद्धत किये गये शे'र अपनी मूल आत्मा में व्याकरण सम्मत नहीं होते किन्तु आसमानी कुलाबा से जोड़कर कृति की समीक्षाएँ हो रही है : दोनों ही भ्रमात्मक स्थिति में है, रचनाकार और समीक्षक दोनों ही। गीत और ग़ज़ल की समीक्षा के लेखन में, इनकी तकनीक का समझना अनिवार्य है। बग़ैर गीत और ग़ज़ल की तकनीक को समझे, इनकी समीक्षा नहीं की जा सकती। गीत अपनी 'अनुगूँज' पहले ही छोड़ चुके हैं। ग़ज़लों में जो अनुगूँज शेष है, उसको कच्चे समीक्षक खा–पचा रहे हैं। कई–कई ग़ज़ल–कृतियों की समीक्षा को पढ़कर यह बाद अदब से और ईमानदारी से कही जा सकती है। वाणिब समीक्षा से कृति और कृतिकार का मान बढ़ता है। विवेकहीन समीक्षा से कृति में 'घटियापन' आता है।

वैसे भी हिन्दी–ग़ज़ल की दिशा में वस्तुनिष्ठ समीक्षा करने वाले समीक्षकों का अकाल है। समीक्षाएँ कृति को देखकर नहीं, कृतिकार को देखकर होने लगी हैं। सिर्फ 'कथ्य' को मीटर मानकर होने वाली समीक्षाएँ व्याकरणि अनुशासन को नज़रअन्दाज कर देती हैं। नयी कविता और छन्द विहीन कविता में तो सुविधाएँ ही सुविधाएँ हैं किन्तु ग़ज़ल में यह छूट नहीं ही चलेगी। छन्द में कविता करना मुश्किलतरीन काम है। हिन्दी काव्य– मंच के संचालक, बहुचर्चित हास्य–व्यंग्य कवि श्री 'सूँड' फ़ैजावादी अपनी बेलौस और बेबाक बयानी के लिये काफ़ी विख्यात थे। एक काव्य–समारोह में एक 'नयी कविता' के कवि को काव्य–पाठ के लिये आमंत्रित करने के पूर्व , उन्होंने अपनी टिप्पणी दी, 'अब अमुख कवि से उनको नयी कविता सुनिये, नयी कविता वो कविता होती है जिसे पढ़कर कोई भी भिखारी शाम तक एक नया पैसा नहीं पा सकता। संभव है, शाम तक उसे दस–पांच लात–जूते मिल जाय। छन्द में कविता पढ़कर कोई भी भिखारी शाम तक अपने खाने–पीने का इन्तेजामतो कर ही लेगा। काफ़ी देर तक लोग हँसते रहे। बात काफ़ी तल्ख़ थी किन्तु हक़ीकत से इन्कार आखिर कैसे किया जाय? छन्दसिकता लोकमन का

प्राण तत्व है। अफ़सोस इस बात का है कि शॉर्ट कट से लोग कविता की तात्विकता तक पहुँचने का ना–कामयाब प्रयास कर रहे हैं। हिन्दी–ग़ज़ल को आज समझ–सम्पन्न समीक्षकों की दरकार है। हिन्दी–ग़ज़ल को लेकर आज समीक्षाएँ तो हो रही है किन्तु सिर्फ़ और सिर्फ़ कथ्य को ही केन्द्र में रखकर आसमानी बातें हो रही है। व्याकरण को नज़रअंदाज ग़ज़लकार भी कर रहे हैं और समीक्षक भी, समीक्षकों को, जिनकी तादाद ज़ियादः है ग़ज़ल के व्याकरण की जानकारी बहुत कम हैं वे सिर्फ कथ्य को मीटर मानकर, अपनी कलमकारी के गुल खिला रहे हैं, ऐसे में हिन्दी–ग़ज़ल विधा रेशा–रेशा टूट–बिखर जायेगी। इस पंक्तिकार ने ऐसी स्थितियों को देखकर ही अपनी ग़ज़ल में कहा था :–

''कच्चे हाथों में आते ही जल जायेगी
ऐ ग़ज़ल ओढ़नी तेरी 'रेयान' की।''

समझ–सम्पन्न आलोचना से साहित्य की गुणवत्ता में इज़ाफा होता है। आलोचना के लिये की गयी आलोचना से साहित्य पतनोन्मुख होता है। 'कवियों के कवि' कहे जाने वाले शमशेर बहादुर सिंह मानते हैं, ''कविता की सच्ची आलोचना तो प्रायः कम देखने को मिलती है। इसके अनेक स्वाभाविक कारण है। इसमें कभी–कभी खेमेबन्दी का भी आभास मिलता है मगर नये कवियों को उत्साह भी मिलता है और एक स्वस्थ राजनीतिक दृष्टिकोण को काव्य में जगह मिलती है। वैसे आलोचक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। आलोचक के ही कारण हवा में उड़ने वालों को ठोस ज़मीन मिलती है....मैं मानता हूँ कि आलोचक को क्लासिक का अच्छा अध्ययन होना चाहिये। सही आलोचक वह होता है जो रचना की गहराई तक जाने का बार–बार प्रयास करता है। शिल्प के मार्मिक रचाव और कला के विभिन्न अंगों की व्यापक जानकारी उसे होनी चाहिये। बड़प्पन, कुंठा और आत्मुग्धता से ऊपर उठकर अनुभूति के गहरे स्तरों तक पहुंचकर आलोचक वही जो पाठक की मदद करे, रचनाकार को रास्ता सुझाएं और उसका पथ प्रदर्शित करे''। शमशेर बहादुर सिंह द्वारा सुझाए गये समीक्षा तत्व किसी भी समझ–सम्पन्न समीक्षक के लिये कारगर हैं किन्तु आज की स्थिति में ठीक इसका उलट है। समीक्षा सिर्फ़ एक सांघातिक दायरे में सिमटकर रह गयी है। समीक्षकों के पढ़ने का दायरा भी सिमट गया है। समीक्षक को बहु–पठित होना चाहिये। खास तौर पर छान्दसिक रचनाओं की समीक्षा में उसे और अधिक सतर्क रहना चाहिये। सतर्क तो उसे नयी कविता और समकालीन कविता की भी समीक्षा में रहना चाहिये किन्तु वहां गुंजाइश भी काफ़ी उड़ान भरने की है। छान्दसिक कविता यह सुविधा प्रदायित नहीं करती। कवि, समीक्षक, ग़ज़लकार डॉ. चन्द्रभाल सुकुमार अपनी ग़ज़ल–कृति 'इस नदी से बात करनी चाहिए' में लिखते हैं ''यह सही है कि कुछ प्रचलित, चिर–परिचित, उर्दू शब्दों का सम्मोहन हिन्दी–ग़ज़ल को एक नई अंगड़ाई प्रदान करता है किन्तु उर्दू के व्याकरण बांहुओं में अलिंगन–बद्ध होना मैं ज़रूरी नहीं मानता। प्यार जताने के और भी तरीके हैं। हिन्दी की सर्व समृद्ध परम्परा, संस्कार, विशाल शब्दकोश, समुन्नत वैज्ञानिक व्याकरण–पद्धति, संस्कृत अनुप्राणित देवनागरी लिपि, सबका अपना मौलिक सौन्दर्य है। हिन्दी–ग़ज़ल का श्रृंगार भी इसी हिन्दी को करना है.....

हिन्दी जीवन्त आत्मदानियों का ज़बान (भाषा) है। डॉ. चन्द्रभाल सुकुमार ने ग़ज़ल के अपने दूसरे आलेख में कहा है, ''हर भाषा की अपनी भाषीयता होती हैं'' हिन्दी–संस्कृत के व्याकरणिक अनुशासन 'ग़ज़ल कहने' के लिये कम पड़ जाते हैं माता राजभान सलगा य माता राजभान सलम या वर्णिक–मात्रिक छन्दों में ग़ज़ल का विराट कैनवास अँट ही नहीं पाता है। ग़ज़ल के लिये अरबी–फारसी का व्याकरण ही मुनासिब है। इस बात को अनेकशः ग़ज़लविद् स्वीकारते हैं। हिन्दी–ग़ज़लकारों पर उर्दू वाले यह आरोप लगाते रहे हैं, और लगाते हैं कि अमुख ग़ज़लकार की ग़ज़लें व्याकरण में नहीं हैं किन्तु अधिसंख्य ग़ज़लकारों ने जो हिन्दी–ग़ज़ल कहते हैं, अरबी–फारसी के व्याकरण को पूरे तौर पर साधकर ग़ज़लें कह रहे हैं। यह स्थिति हिन्दी–ग़ज़ल के लिये शुभंकर है। आत्ममुग्धता को दर

किनार करके हिन्दी ग़ज़लकारों को हिन्दी–ग़ज़ल की दिशा में और श्रम करने की दरकार है। हिन्दी–ग़ज़लकारों का एक वर्ग शिविरबद्धता को ही मीटर मानकर ग़ज़लें कह रहा है। उनके खेमे के लोग एक–दूसरे को कन्धे पर उठाकर चल रहे हैं और अदबी बेहूदगियों की जय जयकार कर रहे हैं। विधा–हित में यह प्रक्रिया शर्मनाक और ना–मुनासिब है। दूसरे वो ग़ज़लकार हैं जो अपनी मेहनत, निष्ठा और संकल्पित–समर्पित मन से विधा का कायिक कलेवर संवार रहे हैं, अगर बारीक नज़रों से देखा जाय तो इस पंक्तिकार के ये शे'र आज की हिन्दी– ग़ज़ल का वाजिब चेहरा दिखाते हुए महसूस होते हैं :–

''इक हसीं हुस्न लिये आयेगा कल का चेहरा
धुँधला–धुँधला है अभी 'हिन्दी–ग़ज़ल' का चेहरा
वक़्त के शाहजहाँ से ये कोई पूछे तो
ज़र्द क्यों आज है मुम्ताज़ महल का चेहरा
आग पानी में लगायी है किसी ने ऐसी
वक़्त की झील में जलता हैं कमल का चेहरा।''

हिन्दी ग़ज़ल के कुछ नये, कुछ नितान्त नये, कुछ पुराने ग़ज़लकार हिन्दी–ग़ज़ल को अदबी ऑक्सीजन दे रहे हैं डॉ. शिवओम् 'अम्बर' ने ताज़ा स्थिति की अक्कासी–आईनादारी करते हुए लिखा है :–

''हमारे दौर की ग़ज़लें जहाँ है
नुकीले काँटे मीलों तक बिछे हैं।''

डॉ. चन्द्रभाल सुकुमार हिन्दी–ग़ज़ल संदर्भ में पूरी आस्था–विश्वास से कहते हैं :–

'जब ग़ज़ल की साधना होगी स्वतः
अग्नि की आराधना होगी स्वतः
आँसुओं से बात करियेगा अगर
गीत की संभावना होगी स्वतः
इस अमा के वक्ष में भी एक दिन
रौशनी की कामना होगी स्वतः।'

महानिदेशक–काव्यमुखी साहित्य अकादमी
गोहाना मुहम्मदाबाद–276403, जिला–मऊ (उ.प्र.)
मोबा. 9369973494

दुनिया के महाशक्तिशाली राष्ट्र कोरोना से क्यों काँप रहे हैं थर–थर!

✍ **डॉ. लक्ष्मी निधि**

जमीन, आसमान तथा समुद्र से हजारों–हजार किलोमीटर दूर तक आसमान में और पृथ्वी पर मार करने वाले भयानक अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित महाशक्तिशाली राष्ट्र आज कोरोना की बीमारी के सामने थर–थर क्यों काँप रहे हैं ?

आसमान में उड़ते मिसाइलों को जमीन से दागकर जमीन पर गिराने वाले हथियारों से लैस महाबली देश कोरोना के सामने चूहों के समान छुपने के लिए बिलों की क्यों तलाश कर रहे हैं?

आज दुनिया के बहुत से देशों के पास ऐसे–ऐसे मारक हथियार हैं कि पलक मारते ही किसी भी देश को जला कर राख बना सकते हैं। हम ऐसे ही महान शक्तिशाली देशों के राजनेताओं से पूछना चाहते हैं कि कोरोना के वायरस को मारने की शक्ति तुम्हारे पास नहीं है तो फिर किस ताकत के बल पर इतरा रहे हो। फ्लू आये या स्वाइन फ्लू या डेंगू सभी बड़े देशों के हाथ पैर फूल जाते हैं।

अखबारों में खबर छपी है–इटली में डाक्टरों पर दबाव डाला जा रहा है कि बूढ़े–बुजुर्गों को मरने दो, जवानों को बचाओं। कहाँ चला गया अपने नागरिकों की सुरक्षा करने का उसका दावा। कहाँ चली गई उसकी इंसानियत ।

कहा जाता है बहुत देशों के पास इतने अस्पताल नहीं हैं, इतने डॉक्टर नहीं हैं, इतने इंटेन्सिव केयर सेन्टर नहीं हैं जहाँ कोरोना से पीड़ितों को रखा जाये । अखबारों में ऐसी भी खबर छपी थी कि उत्तर कोरिया में हजारों–हजार कोरोना पीड़ितों को गोली मारने का

आदेश दिया गया । इस खबर में कितनी सच्चाई है – हमें नहीं मालूम मगर, राजनीति ऐसी बेरहम होती है जहाँ आदमी का कोई मोल नहीं होता।

हिटलर ने जर्मनी में लाखों यहूदियों को गैस चेम्बर में ठूँस कर मार दिया । राजनेताओं के हाथों में ताकत होती है। उसके हाथों में सरकार होती है । वह जैसा चाहे कानून बना सकती हैं मगर, अब्राहम लिंकन ने जो अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति थे, कहा था – ''जनता के लिये जनता द्वारा जनता की सरकार का नाम जनतंत्र है।''

आज ऐसा लोकतंत्र कहाँ है, ऐसा लोकतंत्र यदि दुनिया के देशों में होता तो, वहाँ भयानक अस्त्र–शस्त्रों के निर्माण पर अरबों–खरबों खर्च की जगह जनता के हित, जनता की सुरक्षा, तथा जनता के कल्याण के लिए बड़े–बड़े अस्पताल होते, रोगों के अनुसंधान के लिए बड़ी–बड़ी प्रयोगशालायें होती। जगह–जगह मेडिकल कॉलेज होते । उत्तम कोटि के डॉक्टरों तथा उत्कृष्ट दवाओं का कोई अभाव नहीं होता ।

आज देश–दुनिया में फेंक (नकली) डाक्टर तथा फेंक (नकली) दवाईयाँ बनते हैं, हथियारों की जाँच–पड़ताल तथा परीक्षण तो होते रहते हैं मगर, जीवन से खिलवाड़ करने वाले इन नकली डॉक्टरों तथा नकली दवाओं के निर्माण करनेवालों को फाँसी पर क्यों नहीं लटकाया जाता । आज यह घड़ियाली आँसू क्यों बहाये जा रहे हैं कि, अस्पताल नहीं हैं, डॉक्टर नहीं हैं, दवाईयाँ नहीं हैं, कई बीमारियों की जाँच के लिए जाँच घर नहीं हैं । इसकी जवाबदेही किसकी है । यदि सरकार कोरोना के बीमारों को इलाज नहीं करा सकती तो क्या उसे इन बीमारों को तोप से उड़ा देने की इजाजत कोई कानून दे सकता है ?

बड़े–बड़े घातक हथियार बनाकर देश को मटियामेट करने वाले शक्तिशाली देश आज कोरोना के डर से चूहों की तरह बचने के लिए बिलों की तलाश क्यों कर रहें हैं ।

कोरोना की बीमारी को लेकर ऐसी भी खबर अखबारों में छपी है कि यह वायरस चीन ने पैदा किया है। चीन कहता है कोरोना वायरस का उत्पादन अमेरिका ने किया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ को इस मामले को गंभीरता से लेना चाहिये । कोरोना वायरस के कारण संयुक्त राष्ट्र ने विश्व में महामारी की घोषणा की है। इतना कर देने भर से वह अपनी जवाबदेही से मुक्त नहीं हो सकता। उसके मानवाधिकार की घोषणा में सुधार करना होगा कि कोई भी देश रोग फैलाने संबंधी वायरस का उत्पादन नहीं करेगा साथ ही यह घोषणा में जोड़ना होगा कि कोई भी देश दूसरे देश के प्रति कोई ऐसी कार्रवाई नहीं करेगा जिससे वहाँ के नागरिकों को जीने के अधिकार से वंचित होना पड़े।

सारे संसार के लिए एक बड़ा संदेश लेकर आयी है–कोरोना की यह बीमारी की दुनिया के सारे देश, एक साथ मिलकर "निःशस्त्रीकरण की घोषणा पर हस्ताक्षर करें । आवश्यकता से अधिक हथियारों का जखीरा नष्ट करें और युद्ध सामग्रियों के उत्पादन पर होने वाले खर्चों को जन–जीवन की सुरक्षा तथा चिकित्सा संबंधी परियोजनाओं पर खर्च किया जाये ताकि भविष्य में ऐसी स्थिति में कोई देश अपने लोगों की सुरक्षा के मामले में सक्षम रहे और जैसा कि अभी वे कोरोना के सामने विवश और लाचार बने हैं, वैसा विवश और लाचार न बन सकें।

निधि बिहार 172, न्यूबाराद्वारी, ह्यम पाईप रोड (नया कोर्ट रोड) पो. साकची, जमशेदपुर–1 (झारखण्ड) मोबा. 09934521954

कविताएँ

गुरु प्रसाद मदन की दो कविताएँ :–

1. ये कहते हैं

ये कहते हैं
''जरा झांकिये अपने अन्दर
उत्तर सब मिल जायेगा
सींच–सींच कर जो पाला है
भेद सभी खुल जायेगा।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद
बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद वैश्यः
पदभ्यां शूदो अजायत''

ऋग्वेद के
पुरूष सूक्त में
किसने घोला ?
यह नानी है वर्णवाद की
यह जननी है जाँत–पाँत की
यह भगिनी है छूत–छात की

इससे अब क्या गिला करोगे?
इससे अब मुख फिरा करोगे?

स्त्री शूद्रों ना द्वीयताम
क्रीतं और अक्रीतं के स्वर
स्मृतियों के ये बमगोले
मनुस्मृति के ये हथगोले

क्या तुम
अब सब
भूल गये हो?

सुबह–सुबह रटना कर जिसकी
मानस की जहरीली गोली –

''ढोल गँवार शूद्र पशुनारी
ये सब ताड़न के अधिकारी''

पूजिय विप्र शील गुण हीना
शूद्र न गुण ज्ञान प्रवीना
शापत ताड़त पुरुष कहंता
विप्र पूज्य अस गावहिं संता
ये बरनाघम तेलि कुम्हारा
स्वपच किरात कोल कलवारा
की रटना भी
क्या तुम भूल गये हो?

नहीं नहीं
तुम बड़े विभेदी
हरफन मौला सघे फरेबी
सदा हाथ लहराते हो तुम
मधुर–मधुर बहलाते हो तुम
कपट छिपाये रहते हो तुम

गीत सदा तुम गाते हो यह
'हम ऊँचे हैं हम ऊँचे हैं
तुम नीचे हो तुम नीचे हो'
सदा यही तुम कहते हो
सरे शाम तुम कहते हो
सरे आम तुम कहते हो

लेकिन अब तो
नहीं चलेगा तेरा फंदा
नहीं चलेगा तेरा धंधा
रूप रहा है तेरा गंदा
कलुब हृदय का तू है बंदा।
ये सब अब हम समझ गये हैं
उलझन से ब सुलझ गये हैं
ये कहते हैं –
'जरा झांकिये अपने अन्दर
उत्तर सब मिल जायेगा।'

2. वो कहते हैं

वो कहते हैं....
गांव–गांव में आग लगी है
जातिवाद की हवा चली है
हर चौराहे हर ढ़ाबे पर
विप्र द्रोह की बात चली है

गली–गली नफरत फैलाते
बकवादों की भीड़ लगी है
देश धर्म की बात न जानें
वतन तोड़ने भीड़ चली हैं

इससे हिन्दू टूट रहा है
गांव–गांव से छूट रहा है
भाईचारा टूट रहा है

गांवों में जो भाईचारा
हमने पहले देखा था
सदी हजारों वर्षों से
हमने जिसको पोषा था

हिन्दू–हिन्दू भेद न कोई
हम रहते थे भाई–भाई
बाहर भीतर यहां वहां सब
बहते रहते जल की नांई

जूठन फटन बसन से जो
जीवनयापन करते थे
पालागन वह करते थे
आशीष सदा हम देते थे

लेकिन
अब तो बड़ा बुरा है
पदतल पर जो पड़ा हुआ था
सीना ताने खड़ा हुआ है
झुकाके आंखें जो रखता था
भृकुटि ताने अड़ा हुआ है।
वो कहते है–
गली–गली में हवा चली है।
जातिवाद की हवा चली है
गांव–गांव में आग लगी है
हर चौराहे हर ढ़ाबे पर
विप्रदोह की बात चली है।

28–बी/2, थार्नहिल रोड, सिविल लाईन्स, इलाहाबाद (उ.प्र.)
मोबा. 9532531589

बाबासाहब

डॉ. धीरजभाई वणकर

बाबा साहब अम्बेडकर को,
थोड़ा पढ़ते ही
अंदरूनी होंसला इतना बुलंद हो गया
कि हमारी दिशा ही बदल गई।
हम 'मनुराज' के विरुद्ध आवाज उठाने लगे
झाडू टोकरी मैला ढोना छोड़कर
खटिया पे उनके सामने बैठकें चाय की चुस्की लेने लगे
ब्राह्मणवादी विचारधारा का डटकर विरोध करने लगे
तानाशाही को नष्ट करने हम खड़े हो गये हैं
अब 'उनकी दाल नहीं गलेगी कभी....
हमारी अस्तिमा अस्तित्व को बचाने हमने,
उठाई है तमतमती कलम....
गैरबराबरी का खात्मा बुलाने,
वे बेचैन होने लगे है सभी
और हम तो देश बचाने,
मानवता का इतिहास लिखने लगे हैं

दरअसल यह जो भी करने लगे हैं हम,
बाबा साहब की बदौलत सिर ऊँचा करके
लोकतंत्र में जनता की आवाज बन के
संविधान के सहारे हम आपका रथ आगे बढ़ायेंगे
जागृत नागरिक का फर्ज अदा करने
हे! बाबा साहब क्यों न आये रास्ते में रोड़े कई

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
जी.एल.एस. कॉलेज फॉर गर्ल्स, दीनबाई टॉवर केसामने,
लाल दरवाजा – अहमदाबाद (गुजरात) पिन. – 380001
मो. 09638437011

कैसे ?

झौली पासवान

नकल पर निर्भर अकल से,
न्याय हो संभव कैसे ?
जगता न विवेक प्राणी का,
बढ़ता जाता अन्याय।

सदा समाज के प्रगति में,
आवश्यक जन जागरण।
अगर नकलची व्यक्ति तो,
नव जागरण संभव कैसे ?

मानव नकलची आदि से,
है नकलची आज भी।
अगर न बदली परम्परा,
हो नया बिहान संभव कैसे ?

आडम्बर व्यवहार में,
सच्चाई उजागर हो कैसे ?
सब चल पड़े उसके पीछे,
साजिस का भेद खुले कैसे ?

विज्ञान आगे चल पड़ा,
फिर भी गरजता भाग्यवाद।
बीच फँसा है कर्मवाद,
जन–जन विकास संभव कैसे ?

समीचीन कुछ नकल भी,
वह नकल नहीं है प्रेरणा।
न हो किसी भी हाल में,
न्याय की अवहेलना।

मैं न्याय माँगने जाऊँ कहाँ ?
अन्याय बताने जाऊँ किसे ?
दूध का दूध पानी का पानी,
कौन कहे मैं कहूँ किसे ?

मानव लिप्सा रहित नहीं,
सीमित नहीं इनकी लिप्सा।
लिप्सा पूर्ति की जुगत में,
न्याय क्या? अन्याय क्या?

ग्राम व पो. – बीरसागर, भाया–पंडौल
थाना–सकरी (मधुबनी) बिहार–847234
मोबा. 8292803825

जवाबदेह

पुतुल मिश्र

पूरी दुनिया को सुंदर और
सुविधापूर्ण बनाने वाले
आज निकल पडे हैं, सड़कों पर
निस्हाय ,निराशृत और भूखे
चल पडे अपने गाँवों की ओर पैदल ही
सरकारी निर्देश अभी पहुँची नहीं इन तक
पहुँच भी जाय तो क्या इन्हें मिल पायेगा
तत्काल कोई सुविधा
सामना भूख और बेकारी से ही नहीं,
मौत से भी है
दुर्घटनाएं, लाठियाँ
तिरस्कार और कोरोना साथ है ही
पर, क्या ये मनेगें
अपनी भुजाओं से दुनिया
बदलने वाले हर हाल में नाप लेगें समूचे
भारत की दूरी
कदाचित् कोई हो इनका भी जवाबदेह।

मुकुन्ददास रोड,
मिलनपल्ली,
सिलीगुड़ी–734005
(दार्जीलिंग)
मोबा. 9126195155

बात हमारी अपणी

मांगीलाल राठौर

जब तक वो छलेंगे, हम भी चलेंगे चाल अपणी
सुनेंगे सब को पर करेंगे, बात हमारी अपणी

हम तब भी लढे थे, आज भी लढत है अपणी
जीत न थी वो उनकी, न हार हमारी अपणी

जुग बिते है, किसी ने न ली खबर अपणी
हम मुये न थे, कि रुक जाये लढत अपणी

बैरी छाया था अंधेरा, आयी न नजर छबी अपणी
हुआ है उजाला सब ओर, क्यूँ न परखे छबी अपणी

अब हुयी है पहचान जुगो, हमे हमारी अपणी
सुनेंगे सब को पर करेंगे, बात हमारी अपणी

आरास ले आऊट, टॉवर लेन, बुलडाणा–443001
(महाराष्ट्र) मोबा. 9158574714

कौन था वह ?

पारस कुंज

एक राष्ट्रकवि का मारा जाना
क्या है हकीकत क्या है फसाना ?

कहते हैं कि, उनीस सौ तीरसठ में
एक कवि को सिर्फ इस लिए
जहर देकर मार दिया गया था कि –

वह जब भी कहता– सच ही कहता
सच के सिवा कुछ नहीं कहता !

वह जब कहता– देश की अस्मिता
असकी सुरक्षा और राष्ट्र के
नव–निर्माण की बात कहता !

एक देश, एक राष्ट्र, एक राष्ट्रभाषा
की बात कहता !

जो कभी सत्ता के गलयारे में भटका
न किसी का प्रशस्ति–गान किया,
और ना ही किसी की चाटुकारिता की।

बल्कि वह जब तक जिया
एक आजाद पंछी की तरह
पूर्ण अस्मिता सहित स्वाभिमान,
आन–बान और शान के साथ
राष्ट्र की पहचान बन कर जिया।

वह जब मंचो पर खड़ा होता,
तो उसके सामने अच्छे–अच्छे
चांद–सितारे भी ध्वस्त हो जाते।

कइयों को उसने, गीत लिखना सिखाया
बहुतों ने उसकी भाव–भंगिमा अपनायी
कइयों ने तो उसके गीतों को भी चुराया
और अपना बता कर मंचों पर सुनाया।

कहते हैं कि– मारे जाने से पूर्व
अपनी ओजपूर्ण–वाणी और
राष्ट्रभक्ति रचनाओं के गायन से
वह इतना लोकप्रिय हो चुका था कि –

सिर्फ उसके नाम की भनक से
चंद–घंटों में ही सुनने बालों का
जन–सैलाब उमड़ पड़ता था।

रात–रात भर कौन कहे––
भोरम–भोर तक
श्रोता उठने का नाम न लेती !
सबकी जुबान पर रहता तो
बस एक, उसी का नाम रहता !

कहने वाले यहाँ तक कहते कि––
उसके सामने राष्ट्र–नायकों तक की
छवि धूमिल पड़ने लगी थी।

तभी उसकी हत्या की खबर
जंगल में लगी आग की तरह
पूरे देश में सर्वत्र फैल गई।

जिला–प्रशासन की कौन कहे
उसने तो राज्य–सरकार तक
को हिला कर रख दिया था।

ऐसे हालात में––
राजा करे, तो क्या करे ?
सोच पाना बड़ा ही कठिन था।

आनन–फानन में उनके लिखित या मौखिक आदेश पर
सर्व–प्रथम उसके पार्थिव–शरीर
को हिरासत में लिया गया।

परिजनों को बुलाने के नाम पर
दिमागी कसरत चलायी गयी !
पर, न तो वे आये, और न
उन्हें लाया ही गया।

जबकि राजा चाहता तो
उन्हें लाया जा सकता था।

सब कुछ जान पेस्टमार्टम तो बनता ही था।
पर तथाकथितों के कहने पर कि –
राष्ट्र कवि का पोस्टमार्टम ?
न होने दिया और न करया ही गया।

जीवितावस्था से मरणोपरांत
या यों कहें कि आज तक उसे,
न तो कोई 'राष्ट्रीय–सम्मान' मिला
और न ही कोई 'पुरस्कार'।

पर, वाह री जनता !
उसने कवि को अपनी सर–आँखों पर बिठाया और
उसे 'राष्ट्रकवि' बनाया।

ऊहापोह की स्थिति से बाहर निकल
तब राजा को ख्याल आया।

कहते हैं कि–करीब बीस–घंटे तक उसके
मृत–शरीर को 'हिरासत' में रखने के बाद
'राष्ट्रध्वज' में लिपटा कर उसकी
शव–यात्रा निकलवाई गयी,

जिसमें सैकड़ों छोटे–बड़े साहित्यकारों
सहित हजारों का जन–सैलाब उमड़ पड़ा।

तब कहीं जाकर 'बंदूक की सलामी'
और पूर्ण 'राजकीय–सम्मान' के साथ
उसकी अंत्येष्टि करवायी गयी।

कहते हैं कि –
उसकी 'पुकार' पर तब
'हिमालय' भी पिघल गया था !
और एक हम हैं कि –
आज तक नहीं पिघले !

क्या पता है आपको !
कौन था वह ?

मुझे तो ज्ञात नहीं !
आजतक, उसके बारे में
सिर्फ सुनता ही आया हूँ !
पर, तलाश जारी है !

यदि पता हो आपको तो
'राष्ट्र' को बतायें और
'राष्ट्र–नायकों' को भी।

इतने वर्षों बाद, शायद अब भी
'उनकी–आँखों' से पश्चाताप के
आँसू छलक जाएँ ?
जिसका वह 'हकदार' था
उसके लिए कुछ कर जाएँ ?

क्योंकि –
मिट्टी के हर पुतले को है, मिट्टी में मिल जाना
जो करना है कर ले, होगा लौट के फिर न आना !

सम्पादक : शब्द यात्रा
सीता निकेत, जयप्रभा पथ
भागलपुर–812002 (बिहार)
व्हाट्सऐप नं. 6201334347

सरसी छन्द

✍ सोहनलाल 'सुबुद्ध'

कट्टरता बांधो पगहे में, तगड़ा खूंटा गाड़।
नाथ डालकर उसको नाथो,दे न समाज उजाड़।।

सब प्रकार की उन्नति बाधक, कट्टरपंथी लोग।
हिंसा, तोड़–फोड़,अशान्ति के,ढूंढ़ें खूब कुयोग।।

जो जी चाहा लिखीं ऋचायें, गढ़े मिथक मन–भांति।
कह 'सुबुद्ध' दी लगा स्वार्थ हित, वर्ण–जाति की पांति।।

आदिवासियों, दलितों, पिछड़ों,चेतो तुम भरपूर।
कट्टरपंथी संगठनों से, रहो कोटि पग दूर।।

दलितों संग सहभोज करना,महज मोहिनी जाल।
बरतन मांजना,पांव धुलना, चंट चुनावी चाल।।

निज मुंह बने मियां मिट्ठू–सुन,खो मत होश–हवास।
संविधान की उड़ा धज्जियां, बना न डालें दास।।

संविधान चौपट करने की, जिनकी कुत्सित चाह।
अपना मत दें मत ऐसों को, 'सुबुद्ध' यही सलाह।।

राष्ट्रवाद दल,व्यक्ति किसी की, नहीं विरासत होत।
सब वाशिंदों के उर बहता, देश–भक्ति का सोत।।

ज्योतिपुंज ज्योतिबा फुले जी, नमन सैकड़ों बार।
महिलाओं–दलितों के हित में,खोले शिक्षा–द्वार।।

छिने नहीं संवैधानिक हक,हो समता–परिवेश।
नमन बुद्ध, अम्बेडकर, फुले,जय–जय भारत देश।।

एस–33, एल.डी.ए. कॉलोनी, ऐशबाग
लखनऊ–226004 (उत्तरप्रदेश)
मोबा. 9453283618

हींग

✍ शेखर

यूँ तो वे हमेशा अपने चेहरों पर
सदाचार का मुखौटा चढ़ाते है
वे तो दोगले चरित्र के पुराने खूनी–लंपट
हमें अक्सर असभ्य कहकर डराते है
क्योंकि हम तो हरदम
तंगी और मजबूरी में मिट्टी के चूल्हे पर बनी रोटी
प्याज और मिर्च के साथ खाते है।

वे हमेशा हमें सताते हैं
और हम पर ही अक्सर बहादुरी दिखाते हैं
सच–सच कहें तो
उनके लात–घूँसों से हम पूरी तरह चरमराते हैं
ताज्जुब है कि वे कैसे
सभ्य–सुशील तथा संस्कारी होने के नाम पर इतराते हैं।
जी हाँ, वे बार–बार हमें रूलाते हैं, या नीचा दिखाते हैं।

भैय्ये, वे कुटिल
खुद अपनी पीठ थपथपाकर
देश का सच्चा कर्ता–धर्ता बताते है
या मन–मर्जी व्यवस्था चलाते है
और भद्दा नाच–नाचकर हुड़दंग मचाते है
रोज–रोज अपने भारी भरकम बोझ को बेहया
हमारे सिर पर जबरन बिठाते है।

उनकी सारी योजनाएँ और नौटंकी नीतियाँ
हमें भूखे रख लज्जित और खत्म करने के वास्ते है
इसीलिए वे हर हथकण्ड़ों को अच्छी तरह जानते है
पता है अब हमें अच्छी तरह कि
वे गुण्ड़ों को क्यों पालते हैं ?
और अपने स्वार्थ सिद्धी हेतु
वे हमेशा मन–मुटाव के मुद्दों को धूर्तता से उछालते है।
हम हर वक्त पराजित ईश्वर को पुकारते है
महाभारत में मुरलीधर पाण्ड़वों को तारते है
किन्तु पानीपत में हम हमेशा हारते है।
वे कौन है जो हमारी जड़ें उखाड़ते हैं?

भैय्ये,
हम तो खाते है प्याज–लहसुन चाव से
और वे दंभ में
हींग का छौक या तड़का लगाते है
वे तो अक्सर अपनी विदेशी पहचान छिपाते है
इसीलिए वे प्याज को बदबूदार
तथा लहसून का लहू से सना बताकर
समूचे देश को ही गरियाते है
तथा हमें असल मुद्दों से भटकाते है
इस तरह वे अपने बचाव का
पुख्ता रास्ता अपनाते है
और हम सीधे–सीधे हाशिए पर आ जाते है।

भैय्ये,
वे टुच्चे खतरों की तरह हमेशा सिर पर मण्डराते है
या हमारे वतन में ही विषमता और भेदभाव फैलाकर
रात–दिन घी चुपड़ी खाते है
और मासूम बच्चों तक को बहकाकर बरगलाते है
किन्तु हम तो उनके षड़यंत्री दिमाग को लतियाते है
क्योंकि अब हमें
महान ज्योतिबा फूले सार्वजनिक सत्य धर्म का
उजियारा दिखाते है
तथा विदेशी घुसपैठियों को चिन्हित कराते है
उनके दल्ले बतावे हमें कि
वे विदेशी हींग भारत में क्यों लाते हैं ?

ए–106, हिल अपार्टमेंट, रोहिणी,
सेक्टर–13, दिल्ली–110085
मोबा. 9873843656

हाइकू

✍ **डॉ. जयसिंह अलवरी**

बदल भेष
खड़े है अपने भी
झूठाने नातें।

आज भले भी
भलाई से दूर है
भूल कायदे।

करके छल
खुद को छलता है
खुद इन्सान।

सत्य – अहिंसा
संयम सदाचार
छूटे न कभी।

बात–बात पे
गुस्सा और अंगार
बुद्धि विनाश।

छल–कपट
कभी नहीं छुपता
सदा दिखता।

बिना अक्ल के
पशुवत जीवन
मिले डपट।

तेरे – मेर मैं
मत उलझों कभी
सब एक है।

वे तमाशा है
खुद ही एक बड़ा
जो बनाते है।

एक इशारा
हि बहुत होता है
अक्ल वालों को।

लूटमार में
अब भले–भले भी
है मशगूल।

धन के भूखे
नहीं कभी किसी के
खुदगरज।

होती है अब
दिन में स्याह रात
भय में साँसें।

बना बनाया
काम सारा बिगाड़े
उतावलता।

अब कहाँ है
वो अमन सुकून
घेरे दंगे है।

यारी निभानी
सबको नहीं आती
चाहिए त्याग।

फैलाये फन
बैठे है विषधर
यूं न निकल।

पौध प्रेम की
लगाते चलो सदा
मिटेगा बैर।

न घबराना
देख मुसीबतों को
चुनौती देना।

राग अपना
नित्य अल्पाने वाले
नहीं किसी के।

सम्पादक–साहित्य सरोवर, न्यू दिल्ली हाउस,
नियर बस स्टेण्ड सिरुगुप्पा–जिला : बल्लारी (कर्नाटक)
मोबा. 09886536450

मुक्तक

✍ डॉ. सुरेश उजाला

कितने आये–गये व़जीर
बन गये राजा कई फ़कीर
भीमराव के जैसी लेकिन
नहीं ज्ञान की कोई नज़ीर।

हम बुद्ध की शरण में जाते हैं
और समता–भाव जगाते हैं
सारी दुनिया जिसको मानें
उस भीम के गाने गाते हैं।

पूरा जिसको याद पहाड़ा
करा कभी न किसी से राड़ा
दलितों के हित में अम्बेडकर
बनकर शेर उम्र भर दहाड़ा।

समता–भाव जगाया मित्रो
जो भोगा सो गाया मित्रों
भीमराव के कहे पे हमने
बौद्ध–धम्म अपनाया मित्रों।

श्रम कर के ही खाया मित्रो
खा कर नहीं लजाया मित्रों
न्याय–बंधुता व समता का
घर–घर पाठ–पढ़ाया मित्रों।

108, तकरोही, पं. दीनदयालपुरम् मार्ग, इन्दिरा नगर,
लखनऊ –226028(उ.प्र.)
मोबा. 9451144480

लोग तो है

✍ चिराग

तू तेरी काबिलियत को ढूँढ़
बुराईयाँ ढूँढ़ने के लिए लोग तो है...
जो रखना है पैर तो आगे रख
पीछे खिंचने के लिए लोग तो है...
तेरे अंदर के जोश का तिनका जला...
जलने के लिए तो लोग है...
जो बनाना है तो यादें बना...
बातें बनाने के लिए लोग है...
प्यार करना है तो खुद से कर...
शत्रुता करने के लिए तो लोग है...
रहना है तो बच्चा बनकर रह
समझदार बनने के लिए तो लोग है...
विश्वास रखना है तो खुद पर रख...
संदेह करने के लिए तो लोग है...
खुद की एक अलग पहचान बना...
इकट्ठे चलने के लिए लोग तो है...
तू कुछ करके दिखा इस दुनिया को
बस कुछ करके दिखा...
बातें करने के लिए लोग तो है...
अपने मंजिल के रास्ते पर अकेला खुद चल
तेरे पीछे चलने के लिए लोग तो है...

68, भाई काका नगर बाक्रोल कॉलोनी, वड़ताल रोड
पो. बाकरोल, तह. व जिला आणंद–388315 (गुज.)
मोबा. 7016944867

छन्दमुक्त कविता (हत्या पूर्व)

✍ जितेन्द्र कुमार

कितने हिंसक,
कितने क्रूर,
कितने नृशंस हैं वो लोग
जो एक स्त्री को जिंदा जलाते हैं
और उसकी हत्या का त्योहार मनाते हैं
और कहते हैं–
'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'

हमें उस सभ्यता,
उस संस्कृति पर गर्व है
जहाँ स्त्री को जिंदा जलाना पर्व है।

चिलबिली दान, चिलबिली
पो. बाजार गोसाई–276127 आजमगढ़ (उ.प्र.)
मोबा. 8808489463

'आपकी पाती, हमारी थाती'

आदरणीया, डॉ. ताराजी परमार,

सप्रेम नमस्कार,

अप्रैल, मई, जून के संयुक्तांक में प्रकाशित अपना लेख मैंने फेसबु क पर भी पढ़ लिया था, परन्तु उसकी प्रति मिलने पर शेष सामग्री भी पढ़ पाया। यह अंक साहित्यिक सामग्री से अत्यधिक समृद्ध और संयुक्तांक की गरिमा से युक्त तथा 'मूकनायक' के साथ अनेक ग्रन्थों की भी जानकारी देने वाला है। कोरोना काल में भी अवसर मिलते ही 'आश्वस्त' का नियमित प्रकाशन आप कर पा रही हैं, इसके लिये बधाई। आपने इस अंक में मेरा जो लेख प्रकाशित किया, इसके लिए धन्यवाद।

कल आश्वस्त का जुलाई 20 का अंक मिला। सम्पादकीय में आपने ठीक ही लिखा है कि संस्कार विहीन शिक्षा का कोई अर्थ नहीं। 190 मराठी कवियों की कविताओं के हिन्दी अनुवाद को प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ **कविता में बाबा साहब अम्बेडकर** युवराज सोनट के कठोर परिश्रम और ध्येयवादिता से प्रभावित करता है। आलेख काफी लम्बा और उद्धरणों की विविधता से पूर्ण है। कविताओं में सरदार पंछी की कविता **आह्वान** और जितेन्द्र अग्रवाल के हाइकू **हारजीत** का आशावादी स्वर उत्साहित करता है। शेष कविताओं का स्वर निराशाजनक आत्म निन्दक है। आश्वस्त का यह स्वर बदलना चाहिए। इंजीनियर आर.सी. विवेक का लेख **अंध विश्वास भगाओं, देश बचाओं** अपने शीर्षक के अनुसार सामग्री तो प्रस्तुत करता है परन्तु अपने ही उठाए हुए इन प्रश्नों का इतना सबकुछ होने के बावजूद भी हम मन्दिरों में क्यों जाते है? हम रामायण क्यों पढते हैं? महाभारत क्यों पढ़ते है? हम हिन्दू धर्म को अपना धर्म क्यों मानते है? कोई उत्तर नहीं देता। इन प्रश्नों के उत्तर में ही वस्तुतः हमारी राष्ट्रीय एकता का रहस्य छिपा है।

आशा है सानन्द है। कुछ दिनों बाद यदि संभव हो सका तो एक लेख भेजूंगा।

डॉ. मथुरेश नन्दन कुलश्रेष्ठ
''आनन्द निकेतन''
75/70, टैगोर पाथ, मान सरोवर,
जयपुर-302020 (राजस्थान)
संपर्क सूत्र :- 87642-95011

सप्रेम जयभीम मैडम,

आश्वस्त का अंक मिला है। अपनी बात से लेकर तो पुरा अंक बेहतरीन हुआ है। दलित साहित्यः आस्वाद के धरातल यह डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमीजी का लेख बहोत महत्वपूर्ण है। काफी संदर्भ के साथ दलित साहित्य की मौलिकता उन्होंने स्पष्ट की है। आपको और लेखक महोदय को शुभकामना।

डॉ. मच्छिंद्र चोरमारे
201, रानी अपार्टमेंट,
मेन रोड़, वैशाली नगर
नागपुर-440012 (महाराष्ट्र)
संपर्क सूत्र :- 94231-53321

.....

'समाचार'

आयोजित की काव्य गोष्ठी

दलित लेखक संघ की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी की ओर से आयोजित काव्य गोष्ठी और 'प्रतिबद्ध' पत्रिका कैलाशचंद विशेषांक का लोकार्पण किया गया। पिछले दिनों दलित लेखक संघ में सक्रिय एवं दलित साहित्य के युवा हस्ताक्षर कैलाशचंद चौहान का आकस्मिक निधन हो गया था। दलित लेखक संघ की पत्रिका 'प्रतिबद्ध' के इस लोकार्पण कार्यक्रम में साहित्यकार कैलाशचंद चौहान के परिवार सहित दलेस की अध्यक्ष अनिता भारती शामिल रही। काव्य गोष्ठी में दलित साहित्य के महत्वपूर्ण लेखकों के साथ-साथ आज के चर्चित युवा कवि भी शामिल रहें। कविता पाठ में कवियों ने फासीवाद, सांप्रदायिकता, असमानता, पाखंडवाद के खिलाफ आवाज उठाई। कार्यक्रम का संचालन दलेस की महासचिव कुमारी अंतिमा ने और धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष गीता सहारे ने किया।

आयु. कर्मशील भारती
308, डॉ. उम्बेडकर चौक,
मुनिरका, नई दिल्ली-110067
संपर्क सूत्र :- 95820-51117

शब्द ज्ञान

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उर्मिला	ऊर्मिला	कार्यवाही (प्रोसिडिंग)	कार्रवायी (एक्शन)
कवियित्री	कवयित्री	मूसलाधार	मूसल
नर्क	नरक	फिटकरी	फिटककरी
अनुग्रहित	अनुगृहीत	बीबी	बीवी
नवरात्रि	नवरात्र	बहन	बहिन
उपरोक्त	उपर्युक्त	वापिस	वापस
कैलाश	कैलास	हॅसी	हँसी
बद्रीनाथ	बदरीनाथ	दामाद	दमाद
एकत्रित	एकत्र	मिष्ठान	मिष्ठान्न
जुखाम	जुकाम	बजार	बाजार
हरयाणा	हरियाणा	शत्शत्	शत-शत
नगद	नकद		

साभार

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिविजन 204/2018-2020 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार